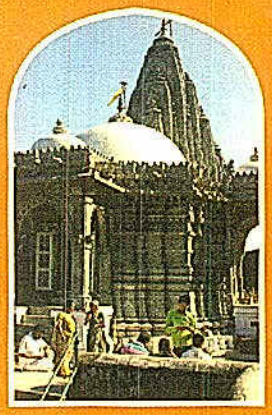

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

VOLUME : 5 ISSUE : 10 MUMBAI, APRIL 2015 PAGES : 36 PRICE : ₹25

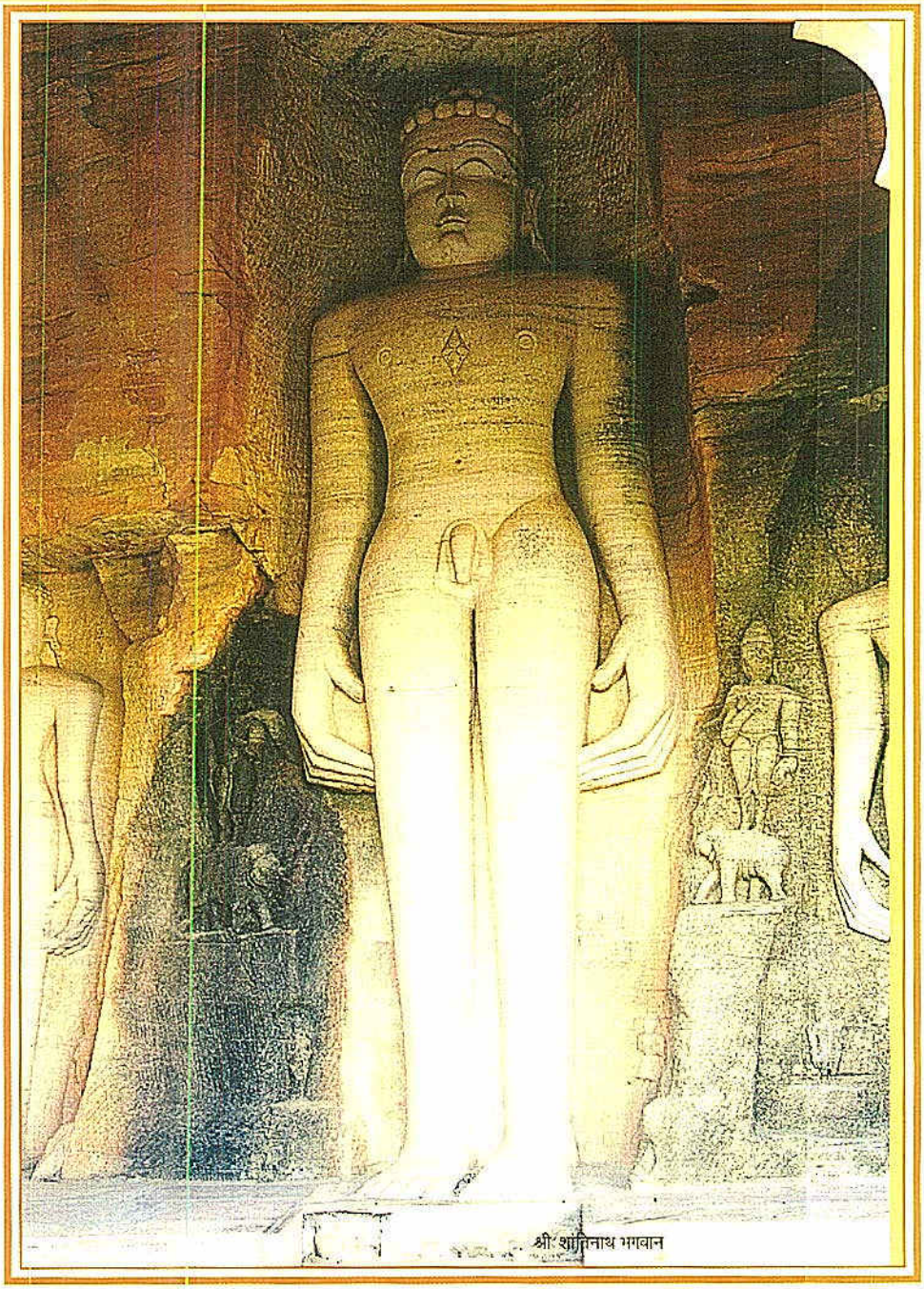

तीर्थंकर श्री १००८ शान्तिनाथ भगवान, खन्दारगिरि-मध्यप्रदेश

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्षीय निवेदन

साधर्मी बंधुओं,

सादर जय जिनेन्द्र।

सर्व प्रथम आप सभी को भगवान महावीर स्वामी के 'जन्म कल्याणक पर्व' को दुनिया भर में 'महावीर जयंती' के रूप में मनाने पर हार्दिक बधाई। जगह-जगह प्रातः प्रभात फेरी, शोभायात्रा के पश्चात प्रभु के अभिषेक - पूजन के भव्य कार्यक्रमों के लिए अंतःकरण से प्रणाम-वंदन प्रेषित करता हूँ।

वर्तमान शासन नायक ने धर्म को 'अहिंसा परमोधर्मः' एवं 'जियो और जीने दो' के गूढ़, सरल संदेश को जन-जन को दिया तो आइये हम इन संदेशों को वर्तमान के परिपेक्ष्य में समझने का प्रयत्न करें :-

अहिंसा परमोधर्मः - सम्पूर्ण सृष्टि के लिए, मानव जाति के लिए परम धर्म 'अहिंसा' है। किसी भी जीव को मन, वचन, काय से कष्ट न पहुंचे, उसके भावों में क्लेश न पैदा हो, यही इसका 'सारभूत' अर्थ समझ में आता है। यही धर्म का मर्म है। न हम किसी को कष्ट क्लेश, हानि पहुंचायें न कोई हमें दुःख, कष्ट, देने का भाव रखे। प्रमादवश, आलस्य के वशीभूत होकर, जाने-अनजाने में हमारे द्वारा किसी भी जीव के प्राणों का आंशिक भी घात न होने पाये, यही भावना हमें हमारे कर्तव्य के रूप में, आचरण के रूप में, दैनिक व्यवहार का बोध कराती है। यही मानव जाति का धर्म है। यही विश्व बंधुत्व का धर्म है। यही परम धर्म है।

इस अहिंसा धर्म को मानने वाला, श्रद्धा रखने वाला, अपने जीवन यापन की क्रियाओं में अंगीकार करने वाला, अपने आचरण में पिरोने वाला ही सच्चा अनुयायी कहलाने का हकदार है। चाहे वो किसी भी देश, जाति, कुल या संप्रदाय में जन्म ले।

'अहिंसा-मयी धर्म' किसी वर्ग विशेष की बपौती नहीं है। जैन कुल में जन्म लेकर भी कोई घोर पाप (हिंसा) का पात्र हो सकता है और अजैन कुल में जन्म लेकर भी कोई अहिंसा का पुजारी बन जाता है। इतिहास में ऐसे अनेक प्रसंग मौजूद हैं। फर्क पड़ता है जीवन शैली से। अहिंसक जीवन शैली में सभी के प्रति सद्भाव है समन्वय है सादगी है, प्रकृति के अनुरूप उज्ज्वलता है, सभी के प्रति स्नेह सम्मान है। यही भारतीय संस्कृति के संस्कार हैं।

जिस काल में ये अहिंसामयी जीवन शैली का

तीर्थंकर से तीर्थ की प्रवृत्ति प्रवर्तमान होता है।

बोलबाला था-भारत आध्यात्मिक समृद्धि के शिखर पर था। 'रामराज्य' कहलाता था। देश को सोने की चिड़िया की उपमा दुनिया ने दे रखी थी। वर्तमान में कितनी शर्मनाक, घृणित, विषम् पापमय स्थिति में फंस गया है यह प्रजातांत्रिक देश। अंग्रेजों ने अपनी कूटनीति से, शिक्षा पद्धति एवं भाषा में आमूल-चूल परिवर्तन कर, भारतीय संस्कारों की जड़ों को इतना खोखला कर दिया कि स्वतंत्रता मिलने के बाद भी हिन्दुस्तानी-'अंग्रेजों की कौमें' पैदा हो रही हैं। जो अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पूरे देश में शासन चलाने के पक्षधर हैं। महावीर, बुद्ध, राम और कृष्ण के अहिंसामयी देश में 300 से बढ़कर 30,000 कत्लखाने, मांस निर्यात कर, भारत को आर्थिक रूप से सम्पन्न बनाने का नारकीय स्वप्न दिखा रहे हैं। क्या से क्या हो गई है हमारी सोच एवं दूरदर्शिता?

क्या खुशहाल हो सकेगा 'भारत',
'मीट-एक्सपोर्ट' की कमाई से।
अरे सब खाक हो जायेगा,
बेजुबान -पशुओं की रुसवाई से।

भारतवर्षीय जैन समाज पुरजोर बधाई देता है महाराष्ट्र एवं हरियाणा के मुख्यमंत्रियों को, जिन्होंने अपने मंत्रिमंडल के सेनापति के रूप में 'संपूर्ण गौवंश' के वध पर प्रतिबंध लगाकर मांसाहारी चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए महायोद्धा अभिमन्यु सा कौशल दिखाने का साहस किया।

बंधुओं, अब सही समय आ गया है जब, हम सभी, अपने-अपने नगरों में, राज्यों में एक साथ ये आवाज बुलंद करें कि :-

(1) मांसाहारी पदार्थों, मीट उत्पादक इकाइयों को उद्योग की श्रेणी से हटाया जावे।

(2) कत्लखानों को दी जाने वाली छूट, प्रोत्साहन सुविधायें, बैंकों से सस्ती ब्याज दर की सुविधाएं निरस्त की जावें।

(3) 'कृषि उत्पादन' की श्रेणी से मुर्गी पालन-मछली पालन जैसे क्रूर व्यवसायों को हटाया जावे।

सम्पूर्ण जैन समाज, विश्व हिन्दू परिषद, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एवं ऐसी ही संस्कारित विचारधारा वाली शक्तियों के साथ, कंधे से कंधा मिलाकर, आंदोलन की रूपरेखा के माध्यम से, भारत राष्ट्र की आत्मा को राजनीति के धरातल से ऊपर आने में अपनी-अपनी भूमिका अदा करें।

दर्द कांटे के चुभने का भी,
तुझसे सहा जाता नहीं।
क्या बेकसूर पशु-पक्षियों के कत्लेआम
पर तरस तुझे आता नहीं।।

'जियो और जीने दो

'जय जिनेन्द्र

आपका

सुधीर जैन

Anger burns the nature of man just like fire burns things.

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 5 अंक 10 **अप्रैल 2015**

परामर्श मण्डल

डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर (मानद्)

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखको के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

इस अंक में

दिगम्बर जैन मुनियों/आचार्यों का निर्बाध विहार	6
जैनधर्म के सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ भगवान्	8
दान धर्म प्रवर्त्तन पर्व : अक्षय तृतीया	11
पूरे के पूरे 28 मूल गुणों के पालक रहे हैं क्षमासागर जी	13
अद्वितीय संत समाधिस्थ	16
मुनिश्री 108 क्षमासागर महाराज का अंतिम चातुर्मास	16
मुनिश्री क्षमासागरजी को शत् - शत् नमन्	18
हावीर जी का वार्षिक लक्खी मेला	20
बा.ब्र.गुणमालाबेन 'लाईफ टाईम एचिवमेन्ट' पुरस्कार से सम्मानित	21
जैन समाज की हस्तियों को मिला राष्ट्रीय सम्मान, समाज गौरवान्वित	26
जल्दी ही विश्व के मानचित्र पर दिखेगा मधुबन (शिखरजी)	29
एक श्रावक के उत्कृष्ट उद्गार	32

तीर्थ अहिंसा धर्म का आयतन है।

दिगम्बर जैन मुनियों/आचार्यों का निर्बाध विहार सम्पूर्ण भारतवर्ष के लिए कानून बने

– कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन

सम्पूर्ण भारतवर्ष में; जब से वह है तभी से यह व्यवस्था रही है कि जैन मुनि/आचार्य दिगम्बर अवस्था में ही विहार करेंगे। तदनुसार वे विहार करते हैं, करते थे और करते रहेंगे। उन्हें कोई रोकेगा नहीं। जिस देश का नाम तीर्थंकर भगवान् श्री ऋषभदेव (जिन्होंने स्वयं मुनि बनकर दिगम्बर हो सम्पूर्ण देश में विहार किया) के पुत्र चक्रवर्ती सम्राट् भरत के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा। उस देश में यदाकदा कतिपय अवांछित/असामाजिक तत्त्वों के द्वारा जैनधर्म के प्रति द्वेष के कारण दिगम्बर जैन मुनियों के मुक्त विहार पर प्रतिबन्ध लगाने की माँग की जाती है जो परम्परा, धर्म–मान्यता एवं भारतीय संविधान के विरुद्ध है। भारतीय संविधान में जैनधर्म को मान्यता दी गयी है। दि. 27 जनवरी, 2014 को भारत सरकार ने जैन धर्मावलम्बियों को राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यक घोषित किया है। अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा के लिए भारतीय संविधान के अनुच्छेद 29 एवं 30 में व्यवस्था है। जैन समाज वास्तव में अल्पसंख्यक समाज है जिसकी स्वतंत्र धार्मिक मान्यताएं हैं। उन्हीं में से एक जैन साधुओं का दिगम्बर मुद्रा में विहार भी सम्मिलित है, इसे किसी भी स्थिति में रोका नहीं जा सकता। बीसवीं शताब्दी में आचार्यश्री शान्तिसागर जी महाराज, आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज ने सम्पूर्ण भारतवर्ष में स्वतंत्र रूप से विहार किया था। आचार्यश्री शान्तिसागर जी महाराज लालकिला, इण्डियागेट आदि अनेक स्थानों पर दिगम्बर मुद्रा में ही गये किन्तु किसी ने उन्हें नहीं रोका। कुछ वर्षों से देखने में आ रहा है कि अनोप मण्डल जैसे कुछ संगठन एवं कुछ व्यक्ति दिगम्बर जैन मुनि विरोधी उपक्रम करते रहते हैं। चलते हुए साधुओं को जानबूझकर एक्सीडेंट कर दुर्घटनाग्रस्त कर देना, वाहन आदि से कुचल देना, अपहरण का प्रयास करना जैसे कार्य इसमें सम्मिलित हैं। मूर्ति चोरी आदि के कृत्य भी किये जा रहे हैं। अभी हाल ही में तमिलनाडु एवं गोवा में इस प्रकार की माँग सरकार से की गई है कि वह दिगम्बर मुनियों को स्वतंत्र रूप से विचरण ना करने दे। प.बंगाल में यदाकदा विरोध होता ही रहता है। यह स्थिति जैन समाज के लिए चिन्ताजनक है। भारतवर्ष की जैन समाज ऐसे किसी भी प्रस्ताव का पुरजोर विरोध करती है और भविष्य में भी हर स्तर पर विरोध करेगी।

तमिलनाडु सरकार यह याद रखे कि तमिलनाडु में जैन संस्कृति के लगभग 150 आयतन–मंदिर एवं सैकड़ों मूर्तियां उपलब्ध हैं जिनसे तमिलनाडु को पर्यटन के रूप में अच्छी खासी रकम प्राप्त होती हैं। गोवा में भी दिगम्बर जैन मन्दिर के निर्माण से वहाँ भी जैनों की आवा–जाही बढ़ी है। वहाँ की सरकारों को इस बात का ध्यान रखते हुए जैन समाज और जैन मुनियों को विहार काल में संरक्षण प्रदान करना चाहिये। वैसे भी भारतीय संविधान में धार्मिक स्वतंत्रता की व्यवस्था है। फिर जैन मुनियों को उनके आचरण/दिगम्बर मुद्रा में विहार से कैसे रोका जा सकता है?

आज भारतवर्ष में प्रमुख रूप से उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड, तमिलनाडु, कर्नाटक, उड़ीसा, महार गुजरात, पश्चिम बंगाल, आसाम, मणिपुर, नागालैंड़, अरुणाचल प्रदेश, पाण्डिचेरी, चण्डीगढ़, हिमाचल प्रदेश आदि प्रदेशों में प्रमुख रूप से दिगम्बर जैन मुनि विचरण करते हैं। **आज तक के इतिहास में कभी किसी जैन मुनि ने राष्ट्र एवं समाज विरोधी कोई कार्य नहीं किया। अहिंसा, शान्ति, सौहार्द, समन्वय एवं सर्वोदय में उनका अटूट विश्वास रहा है। अतः यह जरूरी है कि वे इसी तरह मुक्त विहार करते रहें। इस हेतु केन्द्रीय भारत सरकार को ऐसा कानून बनाना चाहिये जो यह सुनिश्चित करे कि दिगम्बर मुनि सम्पूर्ण भारतवर्ष में दिगम्बर रूप में स्वतंत्र विहार कर सकते हैं और जो भी तत्त्व इसमें बाधा पहुँचायेंगे उन्हें भारतीय दण्ड व्यवस्था**

यदि तुम सदा ही गौरवमय बनना चाहते हो तो सबके प्रति क्षमामय व्यवहार करो (तिरुवल्लूर)

के अनुरूप दण्डित किया जायेगा।

सम्पूर्ण भारतवर्ष की जैन समाज को भी महामहिम राष्ट्रपति, माननीय प्रधानमंत्री एवं अन्य जन–प्रतिनिधियों से मिलकर इस हेतु प्रयास करना चाहिए। कहीं ऐसा ना हो कि असामाजिक तत्त्व अपने अकारण कोप का शिकार जैन मुनियों को बनायें। जहाँ जरूरी हो वहाँ की जैन समाज को दिगम्बर मुनि के आगमन के साथ ही सम्बन्धित स्थान के पुलिस प्रशासन से मिलकर सुरक्षा गार्ड की माँग करना चाहिये। समाज का भी यह कर्त्तव्य है कि वह दिगम्बर मुनि के आहार–विहार आदि काल में समूह रूप में उनके साथ रहे ताकि कोई अप्रिय स्थिति न बने।

दिगम्बर मुनि या आचार्य के नगर आगमन होने पर जैन समाज को सभी धर्मों के मानने वाले प्रमुख गणमान्य जनों को बुलाकर दिगम्बर मुनि के स्वरूप एवं उनकी स्वावलम्बी चर्या से अवगत कराना चाहिये ताकि सौहार्द का वातावरण सहज ही बन सके। यहाँ ध्यान रहे कि हमें अपनी श्रेष्ठता या ज्येष्ठता बताने से बचना चाहिये। हमारे लिये हमारे साधु श्रेष्ठ हैं, वे दूसरों की दृष्टि में सम्माननीय बने, यह प्रयत्न हमारा होना चाहिये।

मेरा दिगम्बर मुनियों, आचार्यों एवं अन्य साधु–साध्वी वर्ग से निवेदन है कि वे एकल विहार बन्द करें। समूह में/संघ में रहने पर प्रतिष्ठा भी बनेगी और अन्य समाज पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। जो साधु–साध्वी स्वयं ज्ञानवान हैं, शास्त्रों के ज्ञाता हैं वे शास्त्र विरुद्ध एकल विहार क्यों करते हैं?

आचार्यश्री सकलकीर्ति महाराज ने 'मूलाचार प्रदीप' (श्लोक–87) में लिखा है कि–

स्थिति स्थान विहारादीन् समुदायेन संयताः।
कुर्वन्तु स्वजनादीनां वृद्धये विघ्नहानये ।।

अर्थात् मुनियों को अपने गुणों की वृद्धि करने के लिये तथा विघ्नों को शांत करने के लिये अपना निवास व विहार आदि सब समुदाय के साथ ही करना चाहिये, अकेले नहीं रहना चाहिये, न अकेले विहार ही करना चाहिये।

आचार्य श्री वसुनंदि सिद्धान्त चक्रवर्ती ने मूलाचार, गाथा– 151 (समाचार अधिकार) की टीका में इस प्रकार लिखा है–

"मुनिनैकाकिना विहारमाणेन गुरुपरिभवश्रुतव्युच्छेदाः तीर्थमलिनत्वजड़ताकृता भवन्ति तथा विह्वलत्वकुशीलत्वपार्श्वस्थत्वानि कृतानीति"

अर्थात् मुनि के एकल विहार से गुरु की निन्दा होती है अर्थात् जिस गुरु ने इनको दीक्षा दी है वह गुरु भी ऐसा ही होगा; श्रुतज्ञान का अध्ययन बंद होने से श्रुत का आगम का व्युच्छेद होगा, तीर्थ मलीन होगा अर्थात् जैन मुनि ऐसे ही हुआ करते हैं; इस प्रकार तीर्थ मलीन होगा तथा जैन मुनि मूर्ख, आकुलित, कुशील, पार्श्वस्थ होते हैं; ऐसा लोगों के द्वारा दूषण दिया जायेगा जिससे धर्म की अप्रभावना होगी।

आचारसार अधिकार 2 (गाथा 29–30) में एकलविहारी साधुओं के बारे में इस प्रकार कहा गया है कि–

श्रुत संतान विच्छित्रिरनवस्थायमक्षयः ।
आज्ञाभंगश्च दुष्कीर्तिस्तीर्थस्य स्याद् गुरोरपि ।।
अग्नि तोयज राजीर्णसर्प कुरादिभिः क्षयः ।
स्वस्याप्यार्तादिकादेक विहारेनुचिते यतः ।।

अर्थात् मुनि के अकेले विहार करने से शास्त्र ज्ञान की परम्परा का नाश हो जाता है, मुनि अवस्था का नाश होता है, व्रतों का नाश होता है, शास्त्र की आज्ञा का भंग होता है, धर्म की अपकीर्ति होती है, गुरु की अपकीर्ति होती है, अग्नि, जल, विष, अजीर्ण, सर्प और दुष्ट लोगों से तथा और भी ऐसे ही अनेक कारणों से अपना नाश होता है, अथवा आर्तध्यान, रौद्रध्यान और अशुभ परिणामों से अपना नाश होता है। इस प्रकार अनुचित अकेले विहार करने में इतने दोष उत्पन्न होते हैं। अतएव पंचमकाल में मुनियों को अकेले विहार कभी नहीं करना चाहिये, आर्यिकाओं के लिये तो सर्वकाल एकलविहार का निषेध है।

यहाँ ध्यान रहे कि यदि हमारा आचरण संयमित और अनुशासित नहीं रहेगा तो अन्य समाज एवं शासन हमारा पक्ष नहीं लेगा। हमें अपनी महत्ता और गरिमा बनाकर रखनी होगी। हमें अपनी सुरक्षा के लिए सतत जागरूक रहने की आवश्यकता है। जैनम् जयतु शासनम् ।।

जैनधर्म के सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ भगवान्

कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'
महामन्त्री–श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद्
एल–65, न्यू इन्दिरानगर, बुरहानपुर (म.प्र.) मो. 09826565737

कामदेव चक्री पद पाकर तीर्थंकर बन जग कल्याण किया।
राग–द्वेष अरु मोह विसर्जित कर जग से मोक्ष पयान किया।।
ऐसे तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ का शान्ति हेतु हम ध्यान करें,
बनें आपके जैसे प्रभु हम, जगत शान्ति सुख सम्मान वरें।।

भरतक्षेत्र के कुरुजांगल देश की हस्तिनापुर नामक नगरी धन–धान्य–वैभव एवं सात्विक प्रजाजनों के कारण अतिशय प्रसिद्धि को प्राप्त थी। जिस प्रकार शरीर के मध्य में नाभि होती है उसी प्रकार कुरुजांगल देश के मध्य में हस्तिनापुर नगरी थी। हस्तिनापुर की विशेषता तो जग प्रसिद्ध ही है कि वहाँ तीर्थंकर मुनि श्री ऋषभदेव को राजा श्रेयांस ने सर्वप्रथम आहार दान देकर 'दान तीर्थंकर' का सम्मान प्राप्त किया था। इस तरह विलुप्त आहार दान की परम्परा हस्तिनापुर से प्रारंभ हुई थी। आचार्य श्री गुणभद्र ने हस्तिनापुर की विशेषताओं का वर्णन करते हुए लिखा है कि– वहाँ धर्म अहिंसा रूप माना जाता था, मुनि इच्छारहित थे, और देव रागादि दोषों से रहित अर्हन्त ही माने जाते थे इसलिए वहाँ के सभी मनुष्य धर्मात्मा थे। वहाँ के श्रावक, चक्की चूला आदि पाँच कार्यों से जो थोड़ा सा पाप संचित करते थे उसे पात्रदान आदि के द्वारा शीघ्र ही नष्ट कर डालते थे। वहाँ का राजा न्यायी था, प्रजा धर्मात्मा थी, क्षेत्र जीवरहित–प्रासुक था, और प्रतिदिन स्वाध्याय होता रहता था इसलिए मुनिराज उस नगर को कभी नहीं छोड़ते थे। जिनके वृक्ष अनेक पुष्प और फलों नम्र हो रहे हैं तथा जो सबको आनन्द देने वाले हैं ऐसे उस नगर के समीपवर्ती वनों से इन्द्र का नन्दनवन भी जीता जाता था। संसार में जितनी श्रेष्ठ वस्तुएं उत्पन्न होती हैं उन सबका अपनी उत्पत्ति के स्थान में उपभोग करना अनुचित है इसलिए सब जगह ही श्रेष्ठ वस्तुएँ उसी नगर में आती थीं और वहाँ के रहनेवाले ही उनका उपभोग करते थे। यदि कोई पदार्थ वहाँ से बाहर जाते थे तो दान से ही बाहर जा सकते थे। इस तरह वह नगर पूर्वोक्त त्यागी तथा भोगी जनों से व्याप्त था। उस नगर के सब लोग तादात्विक थे। सिर्फ वर्तमान की ओर दृष्टि रखकर जो भी कमाते थे उसे खर्च कर देते थे। उनकी यह प्रवृत्ति दोषाधायक नहीं थी क्योंकि उनके पुण्य से सभी वस्तुएँ प्रतिदिन

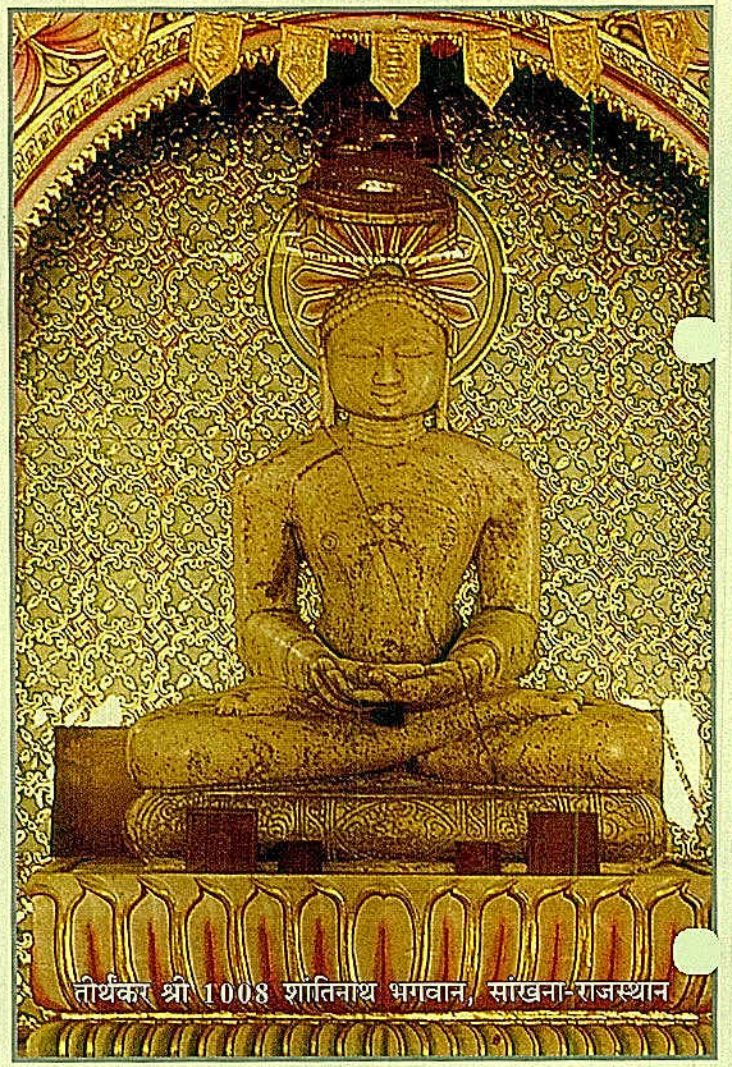
तीर्थंकर श्री 1008 शांतिनाथ भगवान, साखना-राजस्थान

बढ़ती रहती थीं। उस नगर में ब्रम्ह स्थान के उत्तरी भूभाग में राजमन्दिर था जो कि देदीप्यमान भद्रशाल आदि वनों से सुशोभित महामेरु के समान जान पड़ता था। उस राजमन्दिर के चारों ओर यथा योग्य स्थानों पर जो अन्य देदीप्यमान सुन्दर महल बने हुए थे वे मेरु के चारों ओर स्थित नक्षत्रों के समान सुशोभित हो रहे थे।

उपर्युक्त विशेषताओं से सम्पन्न हस्तिनापुर में काश्यपगोत्री इक्ष्वाकुवंशी राजा अजितसेन एवं रानी प्रियदर्शना के सुपुत्र ब्रम्हस्वर्ग से अवतरित विश्वसेन नामक राजा राज्य करते थे। उनकी रानी ऐरादेवी थीं जो पूर्व में राजा अजितंजय एवं उनकी रानी अजिता के गर्भ से (सनत्कुमार स्वर्ग से चयकर) उत्पन्न हुई थीं।

असंतोषी से बड़ा कोई गरीब नहीं, संतोषी से बढ़कर कोई धनवान नहीं।

भाद्रपद कृष्ण सप्तमी के दिन भरणी नक्षत्र में रानी ऐरादेवी ने सोलह स्वप्न और मुख में प्रवेश करता हुआ हाथी देखा। उसी समय मेघरथ का जीव सर्वार्थसिद्धि से चयकर रानी ऐरादेवी के गर्भ में इस प्रकार अवतरित हुआ जैसे सीप में मोती रूप स्वाति नक्षत्र की प्रथम बूँद अवतरित हुई हो। प्रातः रानी ने स्वप्नवृत्त अपने पति राजा विश्वसेन को बताया जिसका फल उन्होंने तीर्थंकर–बालक का गर्भ में अवतरित होना बताया। उसी समय चतुर्णिकाय के देवों के साथ इन्द्र आये और गर्भकल्याणक महोत्सव मनाया। गर्भ के छह माह पूर्व से लेकर, गर्भ के नव माह मिलाकर कुल पन्द्रह माह तक देवों ने रत्नवृष्टि की। श्री,ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी आदि देवियां रानी की सेवा करती थीं।

नव माह व्यतीत होने पर रानी ऐरादेवी ने ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी (उत्तरपुराण के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी) के दिन भरणी नक्षत्र में याम्ययोग में प्रातःकाल शुभमुहूर्त में पुत्र को जन्म दिया। शंखनाद, भेरीनाद, सिंहनाद और घण्टानाद से चारों निकाय के देवों ने अवधिज्ञान से ज्ञात किया है तीर्थंकर के जन्म की सूचना को जिसने; ऐसे सौधर्म इन्द्र की आज्ञा पाकर हस्तिनापुर में राजा विश्वसेन के महल में आकर शची से कहा कि वह रानी ऐरादेवी के प्रसूतिगृह में जाकर तीर्थंकर (बालक) को लेकर आये।

शची ने प्रसूतिगृह में प्रवेश कर माया से जिनमाता को सुला दिया और तीर्थंकर (बालक) को नमस्कार कर उठा लिया तथा बाहर लाकर सौधर्म इन्द्र को सौंपा। सौधर्म इन्द्र ने एक बार नेत्रों से उस बालक को देखा, फिर भी उसके नेत्र तृप्त नहीं हुए। सौधर्म इन्द्र ने अपने सौभाग्य की सराहना की। सौधर्म इन्द्र तीर्थंकर (बालक) को ऐरावत हाथी पर विराजमान कर सुमेरुपर्वत की पाण्डुक शिला पर ले गया, जहाँ उनका क्षीरसागर के जल से भरे एक हजार आठ कलशों से अभिषेक किया। भगवान् के जन्माभिषेक जल (गंधोदक) को हाथों हाथ देवों ने इस प्रकार ग्रहण कर अपने मस्तक पर धारण किया कि एक बूँद जल भी भूमि पर नहीं गिरा। तदनन्तर वस्त्राभूषण से अलंकृत कर सौधर्म इन्द्र ने यह सोचकर कि ये भगवान् सबको शान्ति देने वाले हैं, इसलिए 'शान्ति' इस नाम को प्राप्त हों; उनका नाम श्री शान्तिनाथ रखा–

सर्वशान्तिप्रदो देवः शान्तिरित्यस्तु नामभाक्।
इति तस्याभिषेकान्ते नामासौ निरवर्तयत्।।

(उत्तरपुराण, पर्व 63, श्लोक 406)

तदनन्तर हस्तिनापुर में आकर राजा विश्वसेन के समक्ष जन्मकल्याणक महोत्सव मनाया और तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ का जय–जयकार किया।

श्री धर्मनाथ तीर्थंकर के बाद पौन पल्य कम तीन सागर बीत जाने पर तथा पाव पल्य तक धर्म का विच्छेद हो लेने पर जिन्हें इन्द्र और मनुष्य नमस्कार करते हैं; ऐसे श्री शान्तिनाथ भगवान् का जन्म हुआ था। उनकी आयु भी इसी में सम्मिलित थी। उनकी एक लाख वर्ष की आयु थी, चालीस धनुष ऊँचा शरीर था, स्वर्ण के समान कान्ति थी। ध्वजा, तोरण, सूर्य, चन्द्र, शंख और चक्र आदि शुभ चिन्ह उनके शरीर में थे। वे साक्षात् कामदेव थे। समस्त सौन्दर्य के भण्डार श्री शान्तिनाथ शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की तरह निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होने लगे। उन्हें अपरिमित सांसारिक सुख प्राप्त हुआ।

पच्चीस हजार वर्ष कुमारकाल व्यतीत होने पर महाराज श्री विश्वसेन ने अपना राज्य/राजा पद उन्हें सौंप दिया। क्रम–क्रम से अखण्ड राज सुख भोगते हुए जब उनके पच्चीस हजार वर्ष और व्यतीत हो गये तब तेज को प्रकट करने वाले भगवान् के साम्राज्य के साधन चक्र आदि चौदह रत्न और नौ निधियाँ प्रकट हुईं। उन चौदह रत्नों में से चक्र, छत्र, तलवार और दण्ड; ये आयुधशाला में उत्पन्न हुए थे, काकिणी, चर्म और चूड़ामणि श्रीगृह में प्रकट हुए थे, पुरोहित, स्थपति, सेनापति और गृहपति हस्तिनापुर में मिले थे और कन्या, गज, तथा अश्व विजयार्ध पर्वत पर प्राप्त हुए थे। पूजनीय नौ निधियां भी पुण्य से प्रेरित हुए इन्द्रों के द्वारा नदी और सागर के समागम पर लाकर दी गयी थीं। इस प्रकार चक्रवर्ती का साम्राज्य पाकर दश प्रकार के भोगों का उपभोग करते हुए उन्होंने छह खण्ड पृथ्वी पर राज्य किया। वे तीर्थंकरों के क्रम में पहले ऐसे तीर्थंकर थे जो कामदेव और चक्रवर्ती पद को प्राप्त थे। उनकी 96,000 रानियां थीं।

इस तरह राज्यभोग भोगते हुए जब पच्चीस हजार वर्ष और व्यतीत हो गये तब उन्हें एक दिन दर्पण में अपने दो प्रतिबिम्ब दिखे। उससे हुआ है जातिस्मरण जिनको; ऐसे चक्रवर्ती श्री शान्तिनाथ को मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम रूप सम्पदा से पूर्व जन्म की सब बातें याद आते ही वैराग्य उत्पन्न हो गया। उन्हें संसार असार प्रतीत होने लगा। फलस्वरूप उन्होंने जिनदीक्षा ग्रहण करने का निश्चय किया।

वैराग्योत्पत्ति होते ही लौकान्तिक देव उनके समक्ष

न्यायनिष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती। वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है (तिरुवल्लूर)

उपस्थित हुए और बोले–हे देव! जिसकी चिरकाल से सन्तति टूटी हुई है; ऐसे इस धर्म रूप तीर्थ के प्रवर्तन का आपका यह समय है। तदनन्तर सौधर्म इन्द्र ने उनका दीक्षाभिषेक किया। वे नर, इन्द्रादि देवों के द्वारा उठायी गयी 'सर्वार्थसिद्धि' नामक पालकी में आरूढ़ हो ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी को सायंकाल भरणी नक्षत्र में बेला (तृतीय उपवास) का नियम लेकर अपने उपयोग को स्थिर कर, सिद्ध भगवान् को नमस्कार कर, वस्त्रादि त्यागकर, पंचमुष्टि केशलोंच कर दिगम्बर अवस्था को प्राप्त हो हस्तिनापुर के सहस्र आम्रवन में नन्द (नन्द्यावर्त) वृक्ष के नीचे दीक्षित हो गये। दीक्षा ग्रहण करते ही उन्हें सामायिक चारित्र सम्बन्धी विशुद्धता तथा मनःपर्यय ज्ञान प्रकट हो गया। उनके साथ चक्रायुध आदि एक हजार राजाओं ने भी जिनदीक्षा ग्रहण की।

मुनिवर श्री शान्तिनाथ भगवान् आहार हेतु 'मन्दिरपुर' नामक नगर में प्रविष्ट हुए, वहाँ 'सुमित्र' नामक राजा के यहाँ नवधाभक्ति पूर्वक प्रासुक आहार ग्रहण किया। देवों ने पंचाश्चर्य किए।

पुनः तपः साधना की। उनका छद्मस्थ काल 16वर्ष का था। पौष शुक्ल एकादशी (उत्तरपुराण के अनुसार दशमी) के दिन जब वे पूर्वाभिमुख, पर्यंकासन से विराजमान थे तब अपरान्ह के समय उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हो गयी। उन्हें तीर्थंकरत्व की प्राप्ति हुई। इन्द्रादि देवों ने आकार भगवान् श्री शान्तिनाथ का केवल ज्ञानकल्याणक महोत्सव मनाया।

सवा चार योजन विस्तृत उनके समवसरण में चक्रायुध को आदि लेकर पैंतीस (उत्तरपुराण के अनुसार छत्तीस) गणधर थे, आठ सौ पूर्वों के पारदर्शी थे, इकतालीस हजार आठ सौ शिक्षक थे, और तीन हजार अवधिज्ञानी रूपी निर्मल नेत्रों के धारक थे। वे चार हजार केवलज्ञानियों के स्वामी थे और छह हजार विक्रियाऋद्धि के धारकों से सुशोधित थे। चार हजार मनःपर्यय ज्ञानी और दो हजार चार सौ पूज्यवादी उनके साथ थे। इस प्रकार सब मिलाकर बासठ हजार मुनिराज थे, इनके सिवाय साठ हजार तीन सौ पचास (उत्तरपुराण के अनुसार साठ हजार तीन सौ) हरिषेणा आदि आर्यिकाएं थीं। उनकी मुख्य आर्यिका का नाम भाविता था। सुरकीर्ति को आदि लेकर दो लाख श्रावक, थे, अर्हद्दासी को आदि लेकर चार लाख श्राविकाएं थीं, असंख्यात देव–देवियाँ थीं और संख्यात तिर्यंच थे। इस प्रकार बारह गणों के साथ–साथ वे समीचीन धर्म का उपदेश देते थे। उनके मुख्य श्रोता नारायण थे। उनका कैवल्य काल 23,734 वर्ष का था।

विहार करते–करते जब एक माह की आयु शेष रह गई तब वे भगवान् सम्मेदशिखर पर आये और विहार बन्द कर वहाँ अचल योग से विराजमान हो गये। ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी के दिन रात्रि के पूर्व भाग (वैशाख शुक्ल एकम) में उन कृतकृत्य भगवान् शान्तिनाथ ने तृतीय शुक्लध्यान के द्वारा समस्त योगों का निरोध कर दिया, बन्ध का अभाव कर दिया और अकार आदि पाँच लघु अक्षरों के उच्चारण में जितना काल लगता है उतने समय तक अयोगकेवली अवस्था प्राप्त की। वहीं चतुर्थ शुक्लध्यान के द्वारा वे तीनों शरीरों का नाश कर भरणी (कृतिका) नक्षत्र में खड्गासन से लोक के अग्रभाग पर जा विराजे। उस समय गुण ही उनका शरीर रह गया था। अतीत काल में गये हुए कर्ममल रहित अनंत सिद्ध जहाँ विराजमान थे वहीं जाकर वे विराजमान हो गये। उसी समय इन्द्र सहित, आलस्यरहित और बड़ी भक्ति को धारण करने वाले चार प्रकार के देव आये और अंतिम संस्कार एवं निर्वाणकल्याणक की पूजा कर अपने अपने स्थान पर चले गये। चक्रायुध को आदि लेकर अन्य नौ हजार मुनिराज (उत्तरपुराण के अनुसार) भी इस तरह ध्यान कर तथा औदारिक तैजस और कार्मण इन तीन शरीरों को छोड़ कर निर्वाण को प्राप्त हो गये। कुछ ग्रन्थों में श्री शान्तिनाथ भगवान् के निर्वाण के साथ मुक्त हुए जीवों की संख्या एक हजार बतायी गई है।

इस प्रकार जिन्होंने उत्तम ज्ञान दर्शन सुख और वीर्य से सुशोभित परमौदारिक शरीर में निवास तथा परमोत्कृष्ट विहार स्थान प्राप्त किये, जो अरहन्त कहलाये और इन्द्र ने जिनकी दृढ़ पूजा की ऐसे श्री शान्तिनाथ भगवान् तुम सबके लिए सप्त परम स्थान प्रदान करें। हम सब भी यह स्तवन करें–

स्वदोषशान्त्याविहितात्मशान्तिः शान्तेर्विधाता शरणंगतानाम्।
भूयाद्भवक्लेशभयोपशान्त्यै शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः।।

अर्थात् अपने रागादि दोषों की शान्ति से जिन्हें आत्मशान्ति की प्राप्ति हुई है, जो शरण में आए हुए जीवों को शान्ति के करने वाले हैं, जो कर्म रूपी शत्रुओं को जीतने वाले हैं, विशिष्ट ज्ञान अथवा लोकोत्तर ऐश्वर्य से युक्त हैं तथा शरण देने में निपुण हैं; वे शान्तिनाथ जिनेन्द्र मेरे संसार परिभ्रमण, क्लेशों और भयों की शान्ति के लिए हों।

परोपकारी के हाथ का धन उस वृक्ष के समान है जो औषधियों का सामान देता है और सदा हरा बना रहता है (तिरुवल्लूर)

दान धर्म प्रवर्त्तन पर्व : अक्षय तृतीया

–डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन
मो. 9926055754

पद्मपुराण के अनुसार सुवर्ण के समान प्रभा के धारक ध्यानी भगवान् ऋषभदेव प्रभु जगत् के कल्याण के निमित्त दानधर्म की प्रवृत्ति करने के लिए उद्यत हुए। धीर–वीर भगवान् ने छहमाह के बाद प्रतिमा योग समाप्त कर पृथ्वी तल पर भ्रमण करना प्रारंभ किया। भगवान् समस्त दोषों से रहित थे और मौन धारण कर ही विहार करते थे। जिनका शरीर बहुत ही ऊँचा था तथा जो अपने शरीर की प्रभा से आसपास के भूमण्डल को आलोकित कर रहे थे; ऐसे भ्रमण करने वाले भगवान् के दर्शन कर प्रजा यह समझती थी मानो दूसरा सूर्य ही भ्रमण कर रहा है। वे जिनराज पृथ्वी तल पर जहाँ–जहाँ चरण रखते थे ऐसा जान पड़ता था मानो कमल ही खिल उठे हों। उनके कन्धे मेरु पर्वत के शिखर के समान ऊँचे तथा देदीप्यमान थे, उन पर बड़ी–बड़ी जटाएं किरणों की भाँति सुशोभित हो रही थीं और भगवान् स्वयं बड़ी सावधानी से–ईर्यासमिति से नीचे देखते हुए विहार करते थे। जो शोभा से मेरु पर्वत के समान जान पड़ते थे, ऐसे भगवान् ऋषभदेव किसी दिन विहार करते–करते मध्याह्न के समय हस्तिनापुर नगर में प्रविष्ट हुए। मध्याह्न के सूर्य के समान देदीप्यमान उन पुरुषोत्तम के दर्शन कर हस्तिनापुर के समस्त स्त्री–पुरुष बड़े आश्चर्य से मोह को प्राप्त हो गये अर्थात् किसी को यह ध्यान नहीं रहा कि यह आहार की बेला है, इसलिए भगवान् को आहार देना चाहिए। वहाँ के लोग नाना वर्णों के वस्त्र, अनेक प्रकार के रत्न और हाथी, घोड़े, रथ तथा अन्य प्रकार के वाहन ला–लाकर उन्हें समर्पित करने लगे। विनीत वेष को धारण करने वाले कितने ही लोग पूर्ण चन्द्रमा के समान मुख वाली तथा कमलों के समान नेत्रों से सुशोभित सुन्दर, सुन्दर कन्याएं उनके पास ले आये। जब वे कन्याएं भगवान् के लिए रुचिकर नहीं हुई तब वे निराश होकर स्वयं अपने आप से ही द्वेष करने लगीं और आभूषण दूर फेंक कर भगवान् का ध्यान करती हुई खड़ी रह गयीं।

अथानन्तर–महल के शिखर पर खड़े हुए राजा श्रेयांस ने उन्हें स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखा और देखते ही उसे पूर्व जन्म का स्मरण हो आया। राजा श्रेयांस महल से नीचे उतरकर अन्तःपुर तथा अन्य मित्रजनों के साथ उनके पास आया और हाथ जोड़कर स्तुतिपाठ करता हुआ प्रदक्षिणा देने लगा। सर्वप्रथम राजा ने केशों से भगवान् के चरणों का मार्जन कर (नमस्कार कर) आनन्द के आँसुओं से उनका प्रक्षालन किया। रत्नमयी पात्र से अर्घ देकर उनके चरण धोये, पवित्र स्थान (उच्चासन) में उन्हें विराजमान किया और तदनन्तर उनके गुणों से आकृष्ट चित्त हो कलश में रखा हुआ इक्षु का शीतल रस लेकर विधिपूर्वक श्रेष्ठ पारणा करायी–आहार दिया। (रसमिक्षोः समादाय कलशस्थं सुशीलतम्। चकार परमं श्राद्धं तदगुणाकृष्टमानसः।।–पद्मपुराण ४/१६)

उसी समय आकाश में चलने वाले देवों ने प्रसन्न होकर साधु–साधु, धन्य–धन्य शब्दों के समूह से मिश्रित एवं दिग्मण्डल को मुखरित करने वाले दुन्दुभि बाजों का भारी शब्द किया। प्रमथ जाति के देवों के अधिपतियों ने 'अहोदानं, अहोदानं' कहकर हर्ष के साथ पाँच रंग के फूल बरसाये। अत्यन्त सुखकर स्पर्श से सहित, दिशाओं को सुगन्धित करने वाली वायु बहने लगी और आकाश को व्याप्त करती हुई रत्नों की धारा बरसने लगी। इस प्रकार राजा श्रेयांस तीनों लोकों को आश्चर्य में डालने वाले देवकृत सम्मान को प्राप्त हुआ और इधर सम्राट् भरत ने भी भारी प्रीति के साथ उसकी पूजा की।

अथानन्तर इन्द्रियों को जीतने वाले भगवान् ऋषभदेव, दिगम्बर मुनियों का व्रत कैसा है? इसकी प्रवृत्ति चलाकर फिर से शुभ ध्यान में लीन हो गए।

भगवान् ऋषभदेव के प्रथम आहार की तिथि 'तिलोयपण्णत्ति' के अनुसार वैशाख शुक्ल तृतीया थी। भगवान् ऋषभदेव को आहारदान देने के कारण राजा श्रेयांस के यहाँ उस दिन रसोई गृह में भोजन अक्षीण हो गया था अतः वह दिवस अक्षय तृतीया पर्व के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

आज भी लोग इस पर्व को आखातीज या अक्षयतृतीया के नाम से मनाते हैं।

आद्य तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने मुनि दीक्षा ग्रहणकर छह माह तपस्या की अनन्तर वे आहार हेतु निकले; किन्तु आहार विधि नहीं जानने के कारण कहीं भी आहार का सुयोग नहीं मिला। आहार हेतु निकले भगवान् कैसे प्रतीत हुए; इस विषय में 'हरिवंश पुराण' में उल्लेख मिलता है कि–

अहो कान्तेः परं स्थानमहो दीप्तेः परं पदम् ।
अहो सुशील शैलोऽयं गुणराशिरहो महान् ।।
सौरूप्यस्य परा कोटिः सौलावण्यस्य भूः पराः।
माधुर्यस्य पराऽवस्था धैर्यस्यायं परा स्थितिः ।।

अर्थात् अहो! ये भगवान् कान्ति के परम स्थान हैं, दीप्ति के अद्वितीय धाम हैं, अहो! ये उत्तम शील के मानो पर्वत हैं, अहो! ये गुणों के महासागर हैं। ये सुन्दर रूप की परम सीमा हैं, वे

णायं णरस्स सारो (दंसणपाहुड़, गा.31)। अर्थ- मनुष्य का सार ज्ञान है।

लावण्य की उत्कृष्ट भूमि हैं, माधुर्य की परम अवस्था हैं और धैर्य की उत्कृष्ट रीति हैं।

एतैतेक्षणसाफल्यमन्ते पश्यत पश्यत।
जना दिग्वसनस्यापि परमां रमणीयताम्।।

अरे भव्यजनो! आओ, आओ, नेत्रों को सफल करो। देखो, नग्न दिगम्बर होने पर भी इनकी कैसी परम सुन्दरता है? ऐसे ही भगवान् छह मास तक पृथ्वी पर विहार करते हुए हस्तिनापुर आये; जहाँ के राजा सोमप्रभ और श्रेयांस थे। उन दोनों भाईयों ने उसी रात चन्द्रमा, इन्द्र की ध्वजा, मेरुपर्वत, बिजली, कल्पवृक्ष, रत्नद्वीप, विमान और पुरुषोत्तम भगवान् ऋषभदेव; ये आठ स्वप्न देखे। जिनका फल विद्वानों ने इस प्रकार बताया कि कुमुद बन्धु चन्द्रमा के समान पृथ्वी पर आनंद को बढ़ाने वाला दिगम्बर मुद्राधारी मुनि आदिकुमार–ऋषभदेव का आहार निमित्त यहाँ पदार्पण होगा। राजा श्रेयांस के यहाँ तीर्थंकर मुनि ऋषभदेव का आहार हुआ। तथा उत्कृष्ट दान, अहो पात्र, अहो दान देने की पद्धति, धन्य–धन्य, इस प्रकार आकाश में देवों के शब्द हुए। आकाश में मेघों के समान शब्द करने वाले देव–दुन्दुभि बजने लगे। वे दुन्दुभि तीनों जगत में मानो इस नाम की घोषणा ही कर रहे थे कि दान रूपी तीर्थ को चलाने वाले की उत्पत्ति हो चुकी है। राजा श्रेयांस के दान से उत्पन्न यश की राशि से पूर्ण दिशा रूपी स्त्रियों के मुख से प्रकट हुए श्वासोच्छ्वास के समान सुगंधित वायु बहने लगी। उस समय आकाश में न समा सकने के कारण ही मानो सुमन (पुष्पों) की वर्षा होने लगी थी और वह ऐसी जान पड़ती थी मानो राजा श्रेयांस की सुमन वृत्ति–पवित्र मन का व्यापार ही भीतर न समा सकने के कारण शरीर से बाहर निकल रहा हो। राजा श्रेयांस ने पात्र के लिए जो इक्षुरस की धारा दी थी उसके साथ ईर्ष्या होने के कारण ही मानो आकाश से देवकृत रत्नों की धारा नीचे पड़ने लगी। पूजा होने के बाद जब धर्म तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव तप की वृद्धि के लिए वन को चले गये तब देवों ने अभिषेकपूर्वक दान–तीर्थंकर राजा श्रेयांस की पूजा की।

इस प्रकार राजा श्रेयांस ने भगवान् ऋषभदेव को सर्वप्रथम आहार दान देकर दानतीर्थ का प्रवर्तन किया। आहार दान का फल बताते हुए हरिवंशपुराण में कहा गया है कि–

पुण्यमित्थमुपात्तं यत् तदभ्युदयलक्षणम् ।
दत्वा दातुः फलं दत्ते प्राग् निश्रेयस लक्षणम् ।।

अर्थात् इस तरह दान देने से जो पुण्य संचित होता है वह दाता के लिए पहले स्वर्गादि रूप फल देकर अन्त में मोक्षरूपी फल देता है। कान्ति को धारण करने वाला हमारा कोई बन्धु आज ही यहाँ आवेगा। वह उत्तम यशरूपी ध्वजा का धारक होगा, संसार में समस्त कल्याणों का पर्वत होगा, जगत् के मनोरथों को पूर्ण करने के लिए कल्पवृक्ष रूप होगा, बिजली के समान क्षण–भर ही अपना शरीर दिखलाने वाला होगा, धर्मरूपी रत्नों का महाद्वीप होगा और वैमानिक जगत् स्वर्ग से च्युत हुआ होगा। भगवान् ऋषभदेव ने जिस प्रकार स्वप्न में दर्शन दिया है क्या आज वे स्वयं ही दर्शन देंगे? स्वयं यहाँ पधारेंगे? अनन्तर भगवान् का आहार हेतु आगमन हुआ। भगवान् को देखते ही राजा श्रेयांस को अपने [illegible] पूर्वभवों का जाति स्मरण हुआ जिसमें उन्हें श्रीमति और वज्रजंघ की पर्याय में दिए आहार दान का स्मरण हो आया।

तदनन्तर दान–धर्म की विधि का ज्ञाता और उसकी स्वयं प्रवत्ति कराने वाला राजा श्रेयांस श्रद्धा आदि गुणों से युक्त हो 'हे भगवान्! तिष्ठ–तिष्ठ, यह कहकर भगवान् को घर के भीतर ले गया, वहाँ उच्चासन पर विराजमान कर उसने उनके चरण कमल धोये, उनके चरणों की पूजा करके उन्हें मन, वचन, काय से नमस्कार किया। फिर संपूर्ण लक्षणों से युक्त पात्र के लिए देने की इच्छा से उसने इक्षु रस से भरा हुआ कलश उठाकर कहा कि प्रभो! यह इक्षुरस सोलह उद्गम दोष, सोलह उत्पादन दोष, दश एषणा दोष तथा धूम, अंगार, प्रमाण और संयोजना; इन चार दाता संबंधी दोषों से रहित एवं प्रासुक है, इसे ग्रहण कीजिए। तदनन्तर जिनकी आत्मा विशुद्ध थी और जो पैरों को सीधा कर खड़े थे; ऐसे भगवान् वृषभदेव ने क्रिया से आहार की विधि दिखाते हुए चारित्र की वृद्धि के लिए पारणा की। राजा श्रेयांस ने कल्याणकारी [illegible] जिनेन्द्र रूपी रत्न प्राप्त किये इसलिए पाँच प्रकार की आश्चर्य जनक विशुद्धियों से पंचाश्चर्य प्रकट हुए।

हम सबको अक्षय तृतीया पर्व पर साधुओं को आहारदान देने का संकल्प लेना चाहिए।

संगोष्ठी सम्पन्न

आगरा- ४ अप्रैल, २०१५ एम.डी. इंटर कालेज के शांतिसागर सभागार में आचार्यश्री चैत्य सागर जी (ससंघ) एवं मुनि १०८ श्री विहर्ष सागरजी महाराज (ससंघ) के पावन सानिध्य में सम्यग्दर्शन के उपगूहन, स्थितिकरण अंग, वात्सल्य अंग पर संगोष्ठी सम्पन्न हुई, जिसमें श्री मदनलाल बैनाड़ा, श्री प्रदीप पीयूष एवं डॉ. नीलम जैन (पुणे) ने अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। मुनिश्री विहर्ष सागरजी ने सम्यग्दर्शन श्रावक एवं साधु दोनों के ही जीवन को विशुद्ध, प्रमाणिक एवं गुण सम्पन बनाने वाला कहा। आचार्य श्री ने कहा हमें दोषों को देखकर उपहास नहीं आभास करना चाहिए। अपनत्व का और स्थितिकरण का उपाय करके वात्सल्य का परिचय देना चाहिए। डॉ. नीलम जैन ने कहा सम्यग्दर्शन को गुण वृद्धि का कारण एवं चार-चार अंगों की सारगर्भित विवेचना करते हुए कहा- प्रत्येक अंग परस्पर सम्बद्ध हैं सम्यग्दर्शन का अर्थ है सही एवं समीचीन दृष्टिकोण, सकारात्मक चिंतन ।

कार्यक्रम का संचालन श्री मनोज जैन ने किया तथा सभी की समुचित व्यवस्था दिगम्बर जैन समाज हरी पर्वत द्वारा की गई।

- डॉ. नीलम जैन, पुणे

पूरे के पूरे 28 मूल गुणों के पालक रहे हैं क्षमासागर जी

- निर्मल कुमार पाटोदी, इंदौर

जैन अध्यात्म का सार है- सबसे पहले व्यक्ति मुक्ति के लिए मुनि पद धारण करे। मुनि पद से ही मोक्ष लक्ष्मी पाने का एकमात्र रास्ता है। इसी मार्ग को अंगीकार किया था पूज्य मुनिश्री क्षमासागरजी ने। वे दिगम्बर जैन साधुओं की पंक्ति में अग्रगण्य हो गए थे। निरीह, निस्पृह और अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी थे। उन्हें दिगम्बर जैन समाज के सुविख्यात संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी के अतःवासी हृदय से सदृश गुरु मिला।

आपकी सरलता, निश्छलता, सात्विकता चेहरे से सहज ही छलकती थी। आप अद्वितीय चिंतक, लेखक और प्रवचनकार थे। आवाज में ऐसी मिठास थी कि सुनते हुए शकुन मिलता था, मन एकाग्र हो जाता था। मध्यप्रदेश के सागर जिले में 20 सितम्बर 1957 को जिस बालक का जन्म माता आशादेवी व पिता जीवन कुमार सिंघई के यहां हुआ था उस होनहार, प्रतिभा संपन्न बालक को घर-परिवार में 'मुन्ना' नाम से पुकारा जाता था। युवा अवस्था में आपने इक्षर सागर विश्वविद्यालय से एमटेक की उच्च शिक्षा ग्रहण की और भाग्य में किसी अन्य मार्ग की ओर जाना लिखा था।

संयोग मिला अध्यात्म योगी आचार्यश्री 108 श्री विद्यासागरजी महामुनिराजजी के निकट जाने का। महान संत की संयम, साधना और तप-त्याग को देखकर आपके अंतर्मन में वैराग्य के भाव प्रबल हो गए। आचार्यश्री ने मन ही मन में गुरु स्वीकार कर लिया। आपके वैराग्य की उत्कट भावना गुरु की कसौटी पर खरी उतर गई। पुण्योदय से 10 जनवरी 1980 का दिन ऐसा उदित हुआ कि आप क्षुल्लक दीक्षा से सिद्धक्षेत्र नैनागिरि में सुशोभित हो गए।

वैराग्य की राह आपने अपनाई थी किन्तु परिजन व स्नेहीजनों में वियोग छा गया था। जब क्षुल्लकजी के कानों में भनक पड़ी तो एक भव्य आत्मा को पत्र में आपने लिखा था- 'अपने परिणामों की संभाल आपको स्वयं करना है, हम तो निमित्त मात्र हैं। अपने मन को छोटा न बनाएं। संसार में किसी के गुणों के प्रति हर्ष का भाव आना विरले ही लोगों में होता है। आत्मचिंतन के लिए समय निकालें। आर्तध्यान से बचने का प्रयास करें। आत्मावलोकन करें और संतोष रखें। आप स्वयं स्वाध्यायी हैं, स्वाध्याय का लाभ लें और इस मनुष्य पर्याय को सफल बनाएं। (आस्था के अन्वेषक, मुनि क्षमासागर से)

9 माह के अंतराल से सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि में आपको ऐलक दीक्षा ग्रहण करने का अवसर उपलब्ध हो गया। सिद्धक्षेत्र नैनागिरि की पुण्य धरा पर 20 अगस्त 1982 के दिन मुनि पद की दीक्षा मिल गई। अब आपके साथ विशेष रूप से उल्लेखनीय यह रहा कि आपका नामकरण हर बार क्षुल्लक, ऐलक व मुनि पद के साथ क्षमासागर रहा। यह भी ध्यान देने का है कि मुनिश्री समयसागरजी, योगसागरजी तथा नियमसागरजी के बाद आचार्य महाराज से दीक्षित शिष्यों में वरिष्ठता में आपका क्रम चौथा रहा है।

योगीश्वर विद्यासागरजी दीक्षा प्रदान करते समय शिष्यों से हर बात कहते हैं कि उन्हें अपनी दीक्षा-पद से जुड़े मूल गुणों का पालन हमेशा करना ही है। एक भी मूल गुण का पालन कम नहीं होना चाहिए। मुनि क्षमासागरजी ने मूल गुणों के पालन में कोई कमी नहीं होने दी। आपकी चर्या अखंडित रही। चित्त रागादि कलुषताओं से विमुक्त रहा। आत्मकल्याण के साथ ही साथ

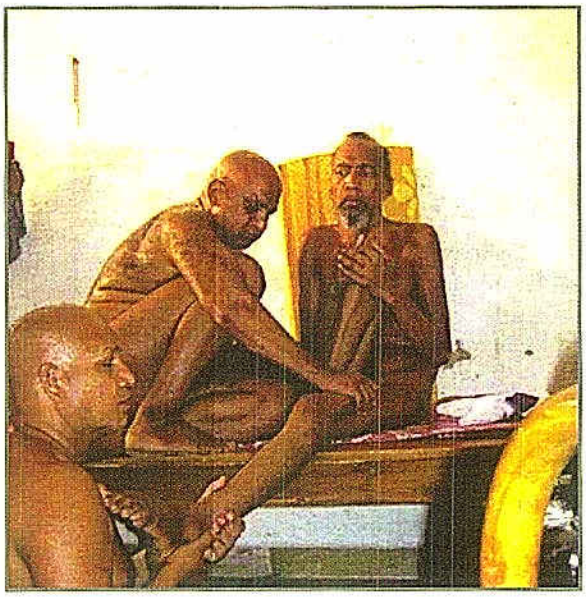

लोककल्याण भी करते रहे हैं। आपके प्रवचन के समय श्रोता इतने तन्मय और भाव-विभोर हो जाते थे कि अगर सुई भी गिर जाए तो आवाज सुनाई दे जाए। मन में स्फूर्ति और प्रेरणा का संचार हो जाता था। आत्मा में पवित्रता की अनुभूति हो जाती थी। पाप-समूह का प्रक्षालन होने लगता था। आपकी लोकप्रिय कृति 'कर्म कैसे करें?' का सार हृदय में अभिन्न रूप से रच-पच जाता था। क्षमासागरजी महामुनिराज का बड़ा योगदान नई युवा पीढ़ी के जीवन को धार्मिक आधार पर संस्कारों के साथ गुणात्मक शिक्षा का रहा है।

उन्होंने अपनी बात को सरलता से उन्हीं की भाषा में समझाया। उनकी लोककल्याण की इस महती भावना को उनसे जुड़े भक्त समुदाय ने 'मैत्री समूह' नाम के संगठन के माध्यम से साकार कर दिया। एक समान विचार वाले भक्तों ने सन् 2001 से 2008 तक कक्षा 10वीं से 12वीं तक के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को 'यंग जैना-अवॉर्ड' नाम की स्कॉलरशिप प्रदान करके पूर्ण किया। महिलाएं संस्कार देने में समर्थ होती हैं इसलिए उन्हें ही आयोजनों का मुख्य अतिथि बनाया जाता था। संस्कार की जमीन को पुख्ता करने की यह नीति अपनाई गई। प्रतिभाओं के प्रेरित करने के कार्यक्रमों में महाराज श्रीजी का सान्निध्य रहता था।

एक जानकारी के अनुसार मैत्री-समूह के भक्तगणों ने महाराजजी के 'यंग-जैना अवॉर्ड' को पुनः प्रारम्भ करने का निर्णय लिया है। अवॉर्ड से सम्मानित जीवन की ऊँचाइयों पर पहुंच चुके एक महानुभाव का कहना है कि उसे अपना जीवन संवारने के लिए मैत्री समूह के माध्यम से जो सहायता स्कॉलरशिप मिली थी, उस उपकार या ऋण को मैं अन्य युवाओं के काम आकर खुशी-खुशी एक बड़े योगदान के साथ वापस लौटाना चाहता हूँ। क्षमासागरजी की मुनि चर्या से मुनि पद की गरिमा गौरवान्वित हो गई है। विवाद या उठापटक आपके नजदीक कभी भी फटक ही नहीं पाई। आपका चिंतन आपकी लेखनी में ढलकर प्रकाशित हुआ है।

ज्ञान एक ऐसा धन है, जो मन को भी अपने वश में कर लेता है।

आपकी रचनाओं से समाज को सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी। ऐसे ही हमारा 'संयुक्त-परिवार' जो आज लगभग छोटा या बिखर चुका है, उसको लेकर भी आपकी कलम ने समाज का ध्यान सरलता से समझ आने लायक शब्दों में प्रकट किया है-

वो पतंग में बैठे के निवालों का तोड़ना,
वो अपनों की संगत में रिश्तों का जोड़ना।
वो दादा की लाठी पकड़ गलियों में घूमना,
वो दादी का बलैया लेना और माथे को चूमना।
सोते वक्त दादी पुराने किस्से-कहानी कहती थीं,
आंख खुलते ही माँ की आरती सुनाई देती थी।
इंसान खुद से दूर अब होता जा रहा है,
वो संयुक्त परिवार का दौर अब खोता जा रहा है।
माली अपने हाथ से हर बीज बोता था,
घर ही अपने आप में पाठशाला होता था।
संस्कार और संस्कृति रग-रग में बसते थे,
उस दौर में हम मुस्कुराते नहीं खुलकर हंसते थे।
मनोरंजन के कई साधन आज हमारे पास हैं,
पर ये निर्जीव है, इनमें नहीं साँस है।
आज गरमी में एसी और जाड़े में हीटर है,
और रिश्तों को मापने के लिए स्वार्थ का मीटर है।
वो समृद्ध नहीं थे फिर भी दस-दस को पालते थे,
खुद ठिठुरते रहते और कम्बल बच्चों पर डालते थे।
मंदिर में हाथ जोड़ तो रोज सर झुकाते हैं,
पर माता-पिता के धोक खाने होली-दीवाली जाते हैं।
मैं आज की युवा पीढ़ी को इक बात बताना चाहूँगा,
उनके अंतःमन में एक दीप जलाना चाहूँगा।
ईश्वर ने जिसे जोड़ा है उसे तोड़ना ठीक नहीं,
ये रिश्ते हमारी जागीर हैं, ये कोई भीख नहीं।
अपनों के बीच की दूरी अब सारी मिटा लो,
रिश्तों की दरार अब भर लो, उन्हें फिर से गले लगा लो।
अपने आप से सारी उम्र नजरें चुराओगे,
अपनों के ना हुए तो किसी के ना हो पाओगे।
सब कुछ भले ही मिल जाए पर अपना अस्तित्व गँवाओगे,
बुजुर्गों की छत्रछाया में ही महफूज रह पाओगे।
होली बेमानी होगी दीपावली झूठी होगी,
अगर पिता दुखी होगा और माँ रूठी होगी।

अंतःकरण को छूने वाली मुनिश्री क्षमासागरजी द्वारा रचित उपरोक्त कविता के लिए उनको शत्-शत् प्रणाम ....

आपका और आपसे संबंधित साहित्य जो सदा प्रेरणा देता रहेगा, वह यह है - पगडंडी सूरज तक, मुनि क्षमासागर की कविताएं, अपना घर (कविता संग्रह), एकाकी भाव स्तोत्र (अनुवाद), अमूर्त शिल्पी, कर्म कैसे करें? के अतिरिक्त आत्मान्वेषी (संस्मरण) यह कृति गुरु महाराज विद्यासागरजी का अनुपम परिचय है।

जैन दर्शन पारिभाषिक कोष (संकलन), गुरुवाणी तथा जीवन के अनसुलझे प्रश्न (प्रवचन संग्रह)। क्षमासागरजी एक ऐसे महासंत थे, जो सदा ही अपने महामना गुरु विद्यासागरजी की आज्ञा में रहे। उनके मार्गदर्शन में अपने संतत्व का पोषण करते रहे। पूर्णतः समर्पित रहे। गुरु के प्रिय शिष्य रहे। गुरु की साधना, चर्या, तप और तपस्या आपको बाहर-भीतर से द्रवित कर देती थी। आपके जीवन के अंतिम 7 वर्षों में आपने कर्मोदय से हुई दैहिक-मानसिक पीड़ा को अंतिम श्वास तक समतापूर्वक सहन करने की अद्भुत क्षमता प्राप्त कर ली थी।

अंत समय तक संयम मार्ग से डिगे नहीं। उसे छोड़ा नहीं। मोक्ष मार्ग बना रहा। सजग रहे, सचेत रहे। आपका यह कथन सार्थक हो गया है- 'सिद्ध नाम सत्य है, अरिहंत नाम सत्य है।' आपकी समाधि मध्यप्रदेश के सागर में स्थित वर्णी आश्रम में प्रातः 5 बजकर 13 मिनट पर आचार्य महाराज विद्यासागरजी के सुशिष्य मुनिश्री भव्यसागरजी के सान्निध्य में तथा 2 ब्रह्मचारी भैयाजी की उपस्थिति में समतापूर्वक हुई। निश्चित ही यह भव्य आत्मा मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर हुई होगी।

इस संसार में संत-स्वरूप में मुनिश्री क्षमासागरजी की रचित इस कविता के भाव, जो जीवन से मुक्त होने के समय की घटना पर व्यक्त किए गए हैं, अद्भुत रूप से प्रासंगिक हैं-

था मैं नींद में और मुझे इतना सजाया जा रहा था...
बड़े प्यार से मुझे नहलाया जा रहा था...
ना जाने था वो कौन सा अजब खेल मेरे घर में...
बच्चों की तरह मुझे कंधे पर उठाया जा रहा था...
था पास मेरा हर अपना उस वक्त...
फिर भी मैं हर किसी के मन से भुलाया जा रहा था ...
जो कभी देखते भी न थे मोहब्बत की निगाहों से ...
उनके दिल से भी प्यार मुझ पर लुटाया जा रहा था...
मालूम नहीं क्यों हैरान था हर कोई मुझे सोते हुए देखकर ...
जोर-जोर से रोकर मुझे जगाया जा रहा था ...
काँप उठी मेरी रूह वो मंजर देखकर ...
जहाँ मुझे हमेशा के लिए सुलाया जा रहा था ...
मोहब्बत की इंतहा थी जिन दिलों में मेरे लिए ...
उन्हीं दिलों के हाथों, आज मैं जलाया जा रहा था ...

शुक्रवार, 13 मार्च, 2015 का दिन संतत्व के नाम हो गया। 50 हजार से भी अधिक भक्तजनों की उपस्थिति में आपका अंतिम संस्कार भाग्योदय तीर्थ के बड़े भू-भाग में किया गया। मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर हुए संत को विनयपूर्वक नमन, नमन, नमन।'

हम किसी को जीवन दे नहीं सकते, लेकिन जीवन बचा तो सकते हैं।

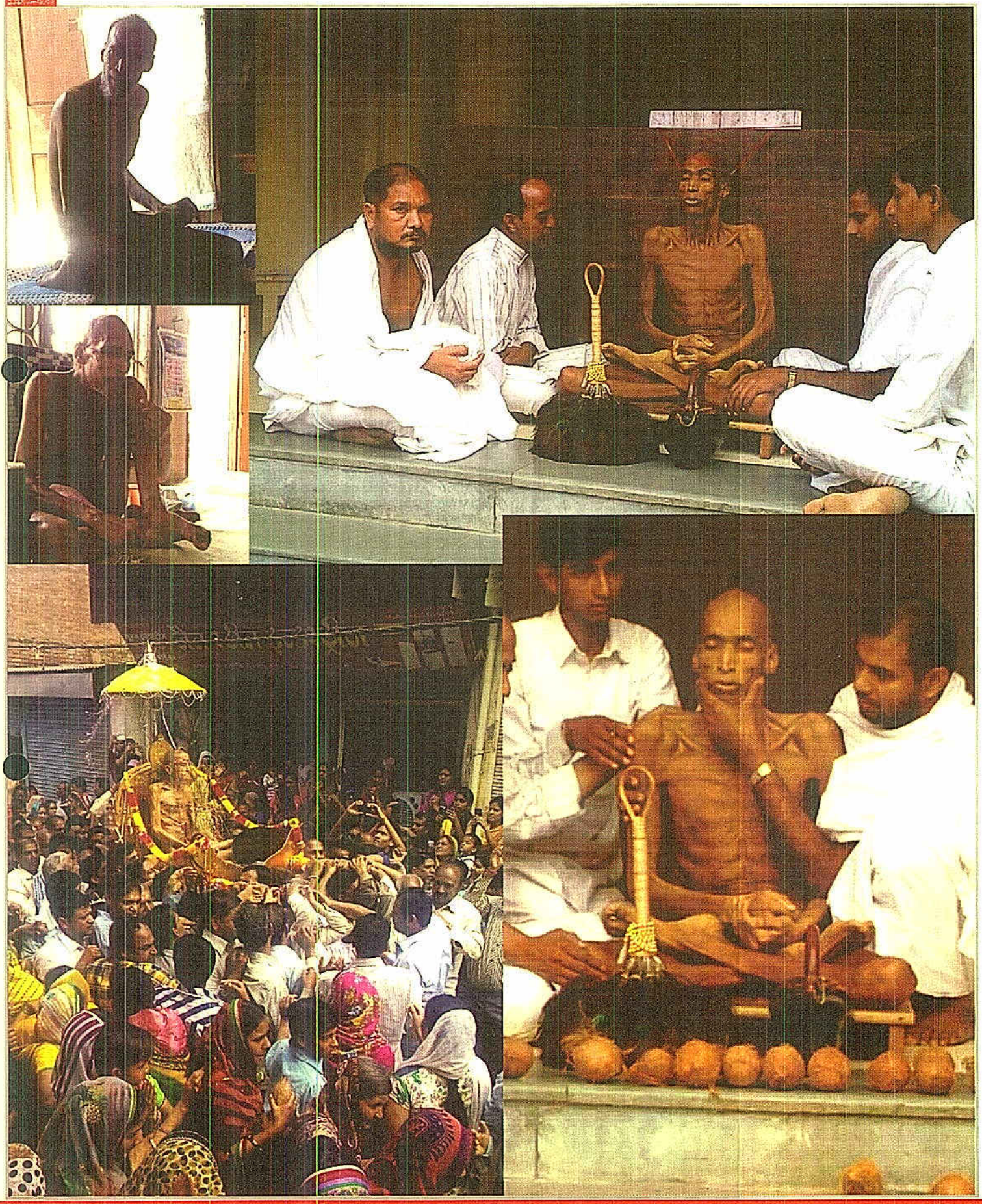

तीर्थ दो प्रकार के हैं - द्रव्य तीर्थ (सम्मेदशिखर, चम्पापुरी, पावापुरी आदि) और भावतीर्थ (सम्यग्ज्ञान, सम्यक तप, संयम आदि) (मूलाचार, गा. 560)

परमपूज्य मुनिश्री 108 क्षमासागरजी महाराज के समाधिमरण पर
ऐलाचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज द्वारा विनयांजली

अद्वितीय संत समाधिस्थ

अत्यन्त शोक का विषय है कि जैन जगत के आभामण्डल में चमकते चन्द्रमा के समान मुनि प्रवर श्री 108 क्षमा सागरजी महाराज का लम्बी अस्वस्थता के पश्चात दिनांक 13 मार्च, 2015 को सागर (म.प्र.) में समाधिमरण हो गया है।

मुनिश्री के प्रति अपनी विनयांजली अर्पित करते हुए ऐलाचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज ने कहा कि मुनि श्री दिगम्बर जैन श्रमण परंपरा के अनमोल रत्न थे। सागर विश्वविद्यालय से एम.टेक. की डिग्री तथा उच्च स्तर की नौकरी प्राप्त कर मुनिश्री ने संसार के बंधनों को तोड़ युवा वर्ग के लिए आदर्श स्थापित किया। नई पीढ़ी को मुनि श्री ने वैज्ञानिक ढंग से जैन धर्म का मर्म समझाया तथा उन्हें धार्मिक गतिविधियों से जोड़ा।

मुनिश्री ने गुरुवर आचार्यश्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज की प्रेरणा एवं छत्रछाया में गृह-त्याग कर तथा आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज से मुनि दीक्षा अंगीकार कर संयम के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए समस्त समाज में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है। मुनिश्री ने अपनी आत्मा का कल्याण करते हुए इस नश्वर शरीर को त्याग कर मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाए हैं तथा अंतिम मंजिल की ओर निकटता प्राप्त की है।

अपने तप-त्याग-साधना से मुनि श्री ने श्रमण समाज को जो अमूल्य भेंट दी है वह वास्तव में आलौकिक एवं अविस्मरणीय है। ब्रह्मचारी अवस्था में हमें मुनिश्री का वात्सल्य एवं भरपूर स्नेह प्राप्त हुआ जिसके लिए हम जीवन भर उनके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

- समीर जैन, पीतमपुरा (दिल्ली)

मुनिश्री 108 क्षमासागर महाराज का अंतिम चातुर्मास

(स्थान- श्री दिगम्बर जैन शांति निकुंज उदासीन आश्रम, सागर)

प्रस्तुति : डॉ. पी.सी.जैन, सागर
मंत्री- श्री दिग.जैन शांति निकुंज उदासीन आश्रम ट्रस्ट

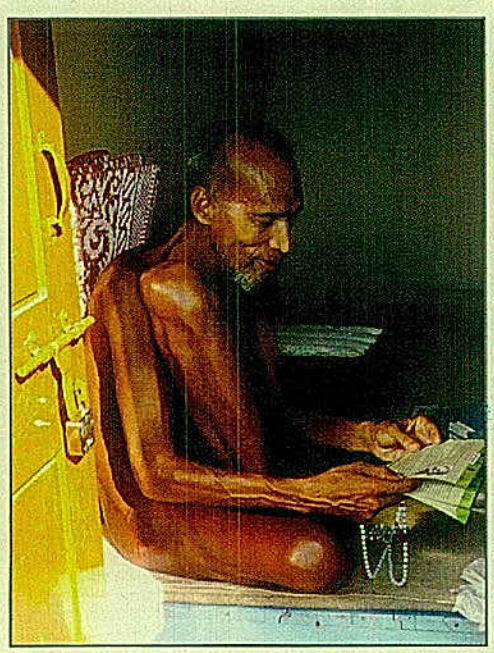

गढ़ाकोटा में दो वर्षायोग पूरे हुये। अगला वर्षायोग सागर में, शांति निकुंज, उदासीन आश्रम, सागर में हो, यह निवेदन करने संस्था की पूरी ट्रस्ट कमेटी, जुलाई के प्रथम सप्ताह में, मुनिश्री की सेवा में निवेदन हेतु पहुंची। गढ़ाकोटा की जैन समाज से भी आग्रह किया। निवेदन की स्वीकृति मिली। मुनिश्री का सागर में भव्य प्रवेश दिनांक 11 जुलाई, 2014 को हुआ। उदासीन आश्रम परिसर के प्रवेश द्वार पर आरती उतारी गई, मंगल गीत गाये गये। भारी भीड़ दो किलोमीटर के रास्ते में रही।

13 जुलाई, 2014 को चातुर्मास कलश स्थापना- समारोह में सम्मिलित होने, महाराजश्री के वाणी-तप-ज्ञान से अभिभूत भक्तगण, जयपुर, जोधपुर, कोटा, दुर्ग, भाटापारा, बंगलौर आदि अनेक जगह से पधारे। कार्यक्रम में निरनार- झाँसी से पधारी स्वर-वाद्य मण्डली अपने धर्म-ज्ञान-श्रद्धा गीतों से समुदाय को झुमाती रही। गर्मी की तेज तपन ज्ञान वर्षा से ठंडी होती रही। मुनिश्री की वाणी का टेप- वाणी को आत्मसात, मंच पर मुनिश्री की उपस्थिति में कर सभी रोमांचित हुये।

9 सितम्बर को, मुनिश्री के दीक्षा दिवस के अवसर पर, मुनिश्री के दीक्षा गुरु आचार्य विद्यासागर, के गुणगान के साथ समारोह प्रारम्भ हुआ। मुनिश्री, सागर विश्वविद्यालय सागर के एम.टेक. फाइनल के छात्र दीक्षा के ठीक पूर्व रहे हैं, दीक्षा के समय, व्यवसायिक योग्यता वाले पिच्छी कमण्डलधारी साधु समाज में लगभग नहीं थे। वाणी का क्षेत्र इतना ज्ञानमय प्रभावक बना कि करीब दस वर्ष से स्वास्थ्य के कारण वाणी पर लगा विराज भी, जनता में उसका प्रभाव कम नहीं कर पाया। आज भी भारत में ही नहीं अमेरिका, ब्रिटेन, आदि दूर देश में वह सुने जाते हैं। मुनिश्री के दर्शन करने, अनेक पुस्तकों की लेखिका डॉ. नीलम जैन, पूना

धम्मो दयाविसुद्धो (आ.कुन्द-कुन्द : बोधपाहुड, गा.25) । अर्थ- शुद्ध भाव से युक्त दयाधर्म हैं।

से पधारी एवं अपनी ओजस्वी वाणी से भक्त जनों को संबोधित किया। उन्हें मुनिश्री के सान्निध्य में विभिन्न स्थानों पर सम्पन्न हुई संगोष्ठियों में देश के विद्वानों की भागीदारी एवं गम्भीर विषयों पर भी मुनिश्री की सहज, सरल, विचार की चर्चा की। मेघों ने सभा मण्डप को भिगोया। किन्तु कार्यक्रम में इतना आकर्षण था कि जगह खाली नहीं हुई।

9 नवम्बर, 2014 को पिच्छी परिवर्तन समारोह में पिच्छी लेने एवं देने वालों की लंबी सूची बनी। सौभाग्य उन्हें ही मिला जिनका त्याग दूसरों से श्रेष्ठ रहा। समारोह में गीत गंगा- भोपाल से पधारे यशस्वी गीतकार चन्द्रसेन की वाणी से बिखरी। गीतों के माध्यम से 'जीवन' जाना। प्रो. भागचन्द 'भागेन्दु' समारोह के सहभागी बने।

सागर की समाज उपकृत हुई। उन्होंने सोलहकारण भावना की नौवीं भावना 'वैयावृत्तकरण' में वर्णित कष्टों से अधिक कष्टयुक्त मुनि की वैयावृत्त करने का सौभाग्य पाया।

महाराज के साथ निरन्तर रहे सेवक- राहुल जैन की सेवा के प्रशंसा में शब्द है ही नहीं।

मुनिश्री 108 क्षमासागरजी का यह अंतिम चातुर्मास सागर में यादगार बना, इतिहास की वस्तु बना। ऐसे साधु याद नहीं जिनकी वाणी अस्वस्थता के कारण रुक गई हो कि पूर्व प्रवचनों का प्रभाव साक्षात दिखता हो।

मुनिश्री की उपस्थिति में प्रति रविवार को दोपहर में पूर्व वाणी प्रवचन सुनने शहर से दूर होने पर भी भीड़ सदैव रही।

मुनिश्री की समाधि 13 मार्च को प्रातः 5.00 बजे मुनिश्री 108 भव्य सागर के सान्निध्य में पूर्ण हुई। देह की अंतिम विदाई यात्रा में सागर भक्तमय हो गया। इतनी भीड़ किसी उत्सव/यात्रा में कभी नहीं हुई। यह रिकॉर्ड मुश्किल से टूटेगा।

प्रिय आत्मीयजन,

मुझे मौत में जीवन के फूल चुनना है।
अभी मुरझाना, टूटकर गिरना और अभी खिल जाना है।
कल यहाँ आया था, कौन कितना रहा इससे क्या ?
मुझे आज अभी लौट जाना है।
मेरे जाने के बाद लोग आएँ, अर्थी संभाले, कांधे बदलें,
इससे पहले मुझे खुद संभल जाना है।
मौत आए और जाने कब आए,
अभी तो मुझे संभल–संभल कर रोज–रोज जीना और रोज–रोज मरना है।

ऐसे कवि हृदय मुनिश्री क्षमासागरजी अब हमारे साथ नहीं हैं, पर उनके कहे शब्द, मन को छू लेने वाली उनकी वाणी, उनकी सहृदयता हमेषा हमारे साथ रहेगी।

मुनिश्री चेतना के बदलाव में विश्वास करते थे, और यही कारण है कि हर कोई उनसे जुड़ा महसूस करता है । ऐसे ही आपकी स्मृति में उनसे जुड़ा कोई न कोई संस्मरण जरूर होगा, तो आप उसे हमसे साझा करियेगा। इन संस्मरणों को हम वेबसाइट पर अपलोड करेंगे और पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की कोशिश करेंगे ।

आपके पास यदि मुनिश्री के कोई फोटो, ऑडियो, वीडियो प्रवचन आदि हो, तो उसे भी शेयर करियेगा। आप हमें मोबाइल 9425424984, 982744031 पर सूचना दें, हम आप से सामग्री प्राप्त कर लेंगे अथवा आप मैत्री समूह, पोस्ट बॉक्स नंबर 15, विदिशा पर भी भेज सकते हैं ।

– आलोक जैन, मुंबई

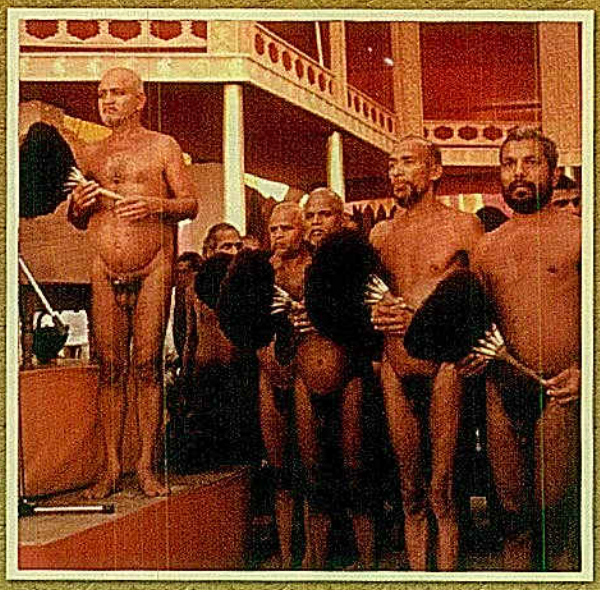

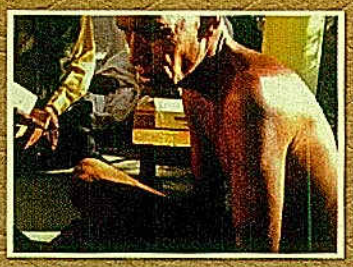
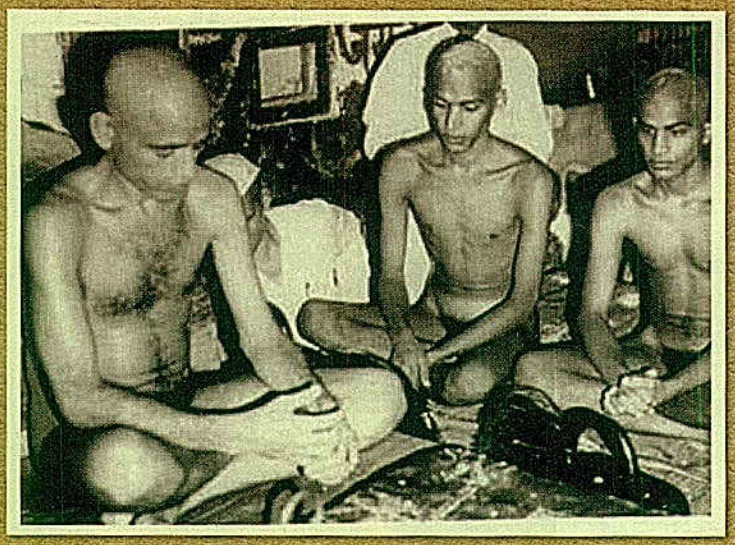

मुनिश्री क्षमासागरजी को शत् - शत् नमन्

- नीता खुशाल जैन, मुंबई

सागर का मोती, सागर में समा गया।
शीप का मोती बन, विदेह क्षेत्र चला गया।
जन्म लेकर नरकाया में, कमाल कर गया।
सागर का लाल, जग में नाम कर गया।
माँ का लाडला, जग की आँखों का तारा बन गया।
कर्म सिद्धांत की व्याख्या, हमें दे गया।
जीवन नश्वर है, पर संकल्प अमर कर गया।
संकल्प विकल्प छोड़, निर्विकल्प बन गया
ना आए भरत-ऐरावत, विदेह से देह रहित बन जाए।
समोशरण मिले और, समोशरण स्वयं लगाए।
गुरुवर की वाणी ले, दिव्य ध्वनि की धुन सुनाए।
तप से तप कर, मुक्ति रमा की धुनि लगाए।
नहीं थ अंत शारीरिक दुखों का, किन्तु फिर भी आत्माराम राग गए।
गुरु दर्शन को अखियां तरस गई, मौत ने जीत की बाजी लगाई।
इन्द्रियों से दर्श नहीं, किन्तु मन तो था गुरु चरणों में।
पल-पल छिन-छिन वंदे विद्यासागरम् गुन गुनाए।
थे,
नहीं हैं,
रहेंगे
क्षमा सागर नमो नमः ॥

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व.दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

जीयो और जीने दो के जयकारों से गूंजा महानगर

कोलकाता, 2 अप्रैल। भगवान महावीर की 2614वीं जयंती के शुभ अवसर पर रवीन्द्र सरणी स्थित श्री दिगम्बर जैन नया मंदिर से श्री महावीर जयंती समारोह समिति कोलकाता के तत्वावधान में निकली ऐतिहासिक विशाल शोभायात्रा।

प्रातः 8 बजे निकली यह विराट शोभायात्रा कोलकाता के विभिन्न मार्गों से होती हुई प्रातः 11 बजे श्री दिगम्बर जैन नया मंदिर पहुंची। तत्पश्चात वहां पाण्डुक शिला पर भगवान महावीर का अभिषेक हुआ।

शोभायात्रा में पावापुर, निर्वाण स्थल का पदम सरोवर, सुमेरू पर्वत पर महावीर जन्माभिषेक, क्रूरता पर शांति की विजय, झूलनोत्सव, जीवन दान, भगवान महावीर का अतिशय, जीओ और जीने दो, एरावत हाथी, भगवान महावीर पर उपसर्ग, तीर्थंकर प्रभु के जीवन में घटित घटनाओं व उपदेशों पर आधारित झांकी शोभायात्रा में मुख्य आकर्षण के केन्द्र रहे। गो हत्या बंद करो, भ्रूण हत्या बंद करो की झांकियों ने सभी को आकर्षित किया। भगवान महावीर के जीवन प्रसंगों की जीवंत झांकियां प्रभु महावीर का पावन संदेश का साक्षात्कार करा रही थी। झांकियों को देखने के लिए सड़क के दोनों ओर ऐतिहासिक भीड़ जुटी।

जगह-जगह वीर प्रभु की जन साधारण द्वारा झूम-झूम कर महाआरती करने का दृश्य, श्री दिगम्बर जैन विद्यालय एवं बालिका विद्यालय के छोटे-छोटे छात्रों द्वारा राष्ट्रीय एवं धार्मिक धुनों पर बजाए गए बैंड बाजे लोगों को विशेष आकर्षित कर रहे थे।

बहुबजार से भी एक सुंदर रैली निकाली गई जिसका समावेश इसी जुलूस में गणेश टाकीज के पास हुआ। शोभायात्रा में शामिल हजारों श्रद्धालुओं का शिकंजी, शरबत, डाब, गन्ने का रस आदि पेय पदार्थों से स्वागत किया गया।

इस दौरान सुप्रभात मंडल, हावड़ा, पुष्पांजली, राजुल महिला मंडल बंगवासी, अनुप्रेक्षा, कांकुड़गाछी, श्री पारस मंडल बेलगछिया, दीपशिखा बड़ा बाजार, श्री दिगम्बर जैन महिला परिषद, नया मंदिर, सम्यकवर्द्धिनी चौरंगी, मुमुक्षु मण्डल ने मंगल गीत व भजन गाए।

श्री दिगम्बर जैन युवक समिति ने प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी नारायण भोज का आयोजन किया। इस अवसर पर पुष्पांजलि द्वारा ई.एन.टी.परीक्षण विभाग का उद्घाटन किया गया। तीर्थ संरक्षिणी महासभा ने बंगाल के प्राचीन पुरातत्व धरोहरों की चित्र प्रदर्शनी लगायी।

महर्षि देवेन्द्र रोड, नलिनी सेठ रोड, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट को स्वागत द्वारों-तोरण-बैनर एवं जैन ध्वजों से विशेष रूप से सजाया गया।

शोभायात्र को सफल बनाने में नये मंदिर जी के मंत्री श्री श्रवण कुमार जैन, संयोजक श्री जितेन्द्र काला, सह-संयोजक-सर्वश्री पवन गदिया, दिनेश गंगवाल, सुरेन्द्र कुमार जैन, समीर कुमार जैन, अजय रारा, संतोष ठोल्या, हरीश जैन, अरुण काला, अभिषेक गंगवाल, सिद्धार्थ गंगवाल, सुरेन्द्र दगड़ा, अरुण बाकलीवाल, संजय पाटनी, संजय छाबड़ा विशेष सक्रिय थे।

- समीर कुमार जैन, कोलकाता

श्री 1008 दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, गुलगांव

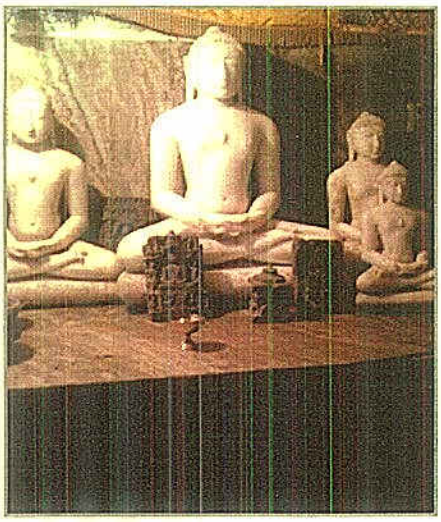

राजस्थान के छोटे से आदर्श गांव गुलगांव में 26.02.2015 को भूगर्भ से 900 साल पुरानी 21 प्रतिमाएं प्रगटित हुई। ये प्रतिमाएं संगमरमर की बनी हुई हैं, बहुत मनमोहक और आकर्षक हैं। इन प्रतिमाओं के दर्शन मात्र से जीवन सफल हो जाता है। सभी प्रतिमाएं अलग-अलग तीर्थंकर की हैं। मूल प्रतिमा श्री शांतिनाथ भगवान की है।

महत्वपूर्ण तथ्य :

1. 46 साल पहले उसी स्थान पर 3 प्रतिमाएं प्रगटित हुई थी। ये प्रतिमाएं नाली निर्माण के दौरान 2 फीट की खुदाई पर मिली थी। तब प्रशासन द्वारा 6 फीट खुदाई करायी गयी, लेकिन कोई मूर्ति नहीं मिली। अब 46 साल बाद उसी स्थान पर नींव खुदाई के दौरान 2.5 फीट खुदाई पर ही निकली।

2. 46 साल पहले 3 मूर्तियाँ

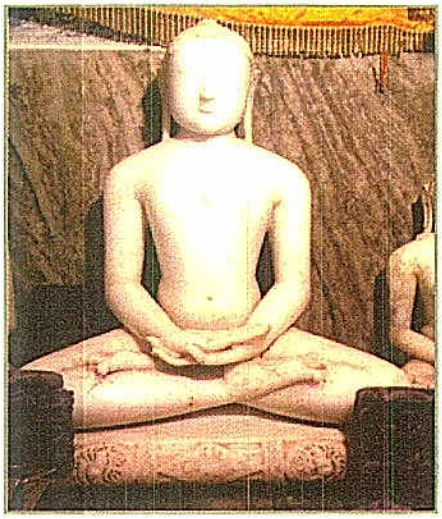

जिसमें जिनदेव विराजमान हैं, वह तीर्थ है (उत्तरपुराण 54, 5)

महावीर जी का वार्षिक लक्खी मेला

महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव में श्रीमती सुशीला पाटनी ने किया झण्डारोहण

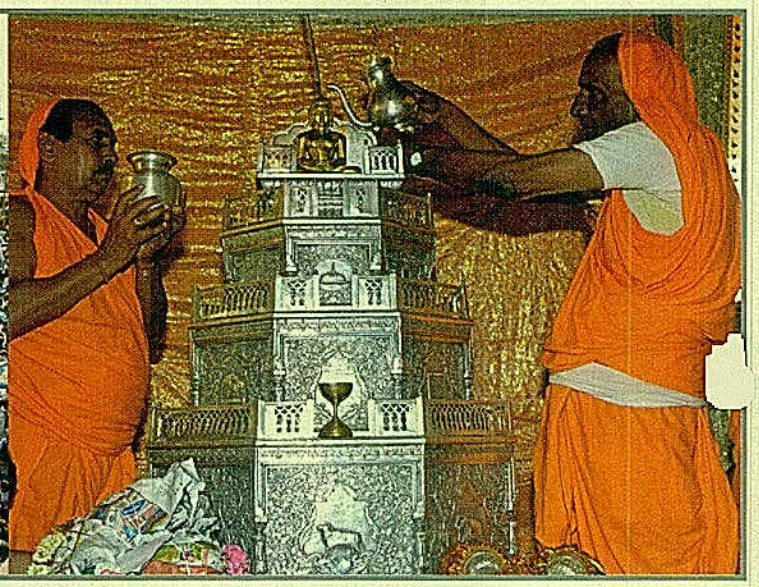

जयपुर। दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी के मुख्य मंदिर कटला परिसर में भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

प्रातः 6.00 बजे मुख्य मंदिर कटला प्रांगण से प्रभात फेरी का जुलूस चरण छतरी, कृष्णा बाई आश्रम, मुख्य बाजार होते हुये भगवान महावीर के मंदिर में समायोजित हुआ।

प्रातः 8.00 बजे कटला प्रांगण में झण्डारोहण श्रीमती सुशीला पाटनी धर्मपत्नी श्री अशोक कुमार पाटनी, किशनगढ़ (अजमेर) द्वारा किया गया। प्रातः 9.00 बजे से कटले से जलयात्रा का जुलूस गाजे-बाजे के साथ मुख्य मंदिर से प्रारम्भ हुई। मुख्य बाजार होते हुए पार्श्वनाथ मंदिर के पास बगीचे में पहुंचकर वहां भगवान महावीर का पं. मुकेश शास्त्री द्वारा कलशों की बोली हुई। वहाँ से महिलाओं ने मंगल कलश लेकर जुलूस मुख्य मंदिर में आया। जहां पर पूजा भक्ति संध्या के साथ भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव श्री वीर संगीत भक्त मण्डल जयपुर के द्वारा भगवान महावीर के बाल जन्मोत्सव पर भजन प्रस्तुत कर श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। वहीं भगवान की बाल्यावस्था मनमोहक झांकी पाण्डाल परिसर में सजायी गयी, जिसमें भजन स्तुति अशोक गंगवाल, विनोद पाटनी (आके दर्श दिखा जा कुण्डलपुर वासी) वही श्रद्धालुओं ने भगवान महावीर की पालने को झुलाते हुए सुख-समृद्धि की कामना की।

पश्चात प्रदर्शनी पाण्डाल में भगवान महावीर के छाया चित्र पर श्री बी.एल.जाटावत, जिला कलेक्टर करौली ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम प्रारम्भ किया, जिसमें विकलांगों, असहाय, विधवा आदि महिलाओं/पुरुषों को ट्राईसाइकिल, सिलाई मशीन, फुटवियर आदि वितरित कर कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। भगवान महावीर के इस वार्षिक मेले में कई वर्षो से गरीब, असहाय, विधवा महिलाओं को प्रबंधकारिणी कमेटी के तत्वावधान में ठिकाना, बक्सी भागचन्द जैन, अशोक जैन, अनिल दीवान द्वारा विकलांगों को 35 ट्राईसाइकिल एवं 20 सिलाई मशीन दी गयी।

इस अवसर पर 108 श्री ऊर्जयंतसागरजी महाराज के सान्निध्य में उन्होंने कहा कि भगवान महावीर स्वामी के उपदेशों पर चलें जिससे पूरे विश्व का कल्याण हो तथा लोग पाप से डरें। प्रातः 10.30बजे स्थानीय दिगम्बर जैन आदर्श महिला महाविद्यालय की विद्यार्थियों कोमोदक वितरण व अस्पताल मरीजों को फल वितरित किये गये। दोपहर 12.00 बजे कटला पश्चिमी पाण्डाल में श्री वीर संगीत मंडल जयपुर के सहयोग से सामूहिक पूजन किया गया। दोपहर 3.30 बजे कटला पश्चिमी पांडाल में सैकड़ों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में भगवान का कलशाभिषेक किया गया। सायंकाल कटला पश्चिम पांडाल में भगवान महावीर की सामूहिक आरती की गई। सायं 7.00 बजे सांस्कृतिक मंच पर राजस्थानी सांस्कृतिक संध्या पर्यटन कला एवं सांस्कृतिक विभाग राजस्थान की सौजन्य से किया, वहीं 7.30 बजे कटला पूर्वी प्रांगण में श्री दिगम्बर जैन आदर्श महिला महाविद्यालय श्रीमहावीरजी की बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भव्य प्रस्तुति दी। इस मौके पर मंदिर कमेटी मंत्री श्री महेन्द्र कुमार पाटनी (जैन), उपाध्यक्ष- श्री एन.के.पाटनी आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे। इस अवसर पर मुख्य मंदिर में हजारों की तादाद में श्रद्धालु उपस्थित थे।

सभी तीर्थ हमें आत्मोन्नति की प्रेरणा देते हैं।

भ. महावीर जन्म जयंती महोत्सव समिति मुंबई की ओर से बा.ब्र.गुणमालाबेन 'लाईफ टाईम एचिवमेन्ट' पुरस्कार से सम्मानित

बीसवीं सदी में दिगम्बर जैन धर्म के पुनरुद्धारक चा. च.आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज के ससंघ के संघपति से विभूषित प्रसिद्ध सेठ श्री पुनमचंदजी घीसूलालजी जवेरी परिवार में सेठ श्री गेंदमलजी (अंतिम जीवन में क्षुल्लक पद से दीक्षित) सुपुत्री 92 वर्षीय बाल ब्रह्मचारिणी श्राविकारत्न सुश्री गुणमालाबेन को मुख्य मंबई श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर कालबादेवी, श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर भुलेश्वर, श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन देरासर मंदिर गुलालवाड़ी, श्री सीमंधर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर, जवेरी बाजार द्वारा 12 वर्ष पूर्व से स्थापित भगवान महावीर जन्म जयंती महोत्सव समिति मुंबई की ओर से एवं समस्त दिगम्बर जैन समाज की ओर से 'आजीवन उपलब्धि पुरस्कार' बनाम 'आजीवन सम्मानित जीवन' यानी **'LIFE TIME ACHIEVEMENT AWARDS'** से विशेष समारोहपूर्वक सम्मानित किया गया।

मुख्य मुंबई कालबादेवी, भुलेश्वर, गुलालवाड़ी आदि के सभी दिगम्बर जैन करीब 12 वर्ष से भ.महावीर की जयंती एक साथ मनाते हैं। इस अवसर पर प्रातः रथयात्रा का आयोजन होता है। बाद में श्रीजी का अभिषेक, पूजन आदि होकर सामूहिक स्वामी वात्सल्य का आयोजन होता है। इस समिति की ओर से उपर्युक्त पुरस्कार से प्रतिवर्ष किसी न किसी सेवाभावी व्यक्ति को सम्मानित किया जाता है।

प्रातः 8.00 बजे रथयात्रा का आयोजन हुआ। प्रमुख मार्ग से भ. महावीर का जयकारा तथा 'जिओ और जीने दो' का उद्घोष करते हुए महाप्रज्ञ भवन में एक समारोह पूर्वक जिनेन्द्र अभिषेक एवं भ. महावीर की पूजन होकर उपर्युक्त कार्य सम्पन्न हुआ।

मंच पर सभी मंदिरों के ट्रस्टीगण उपस्थित हुए। सर्वश्री जम्बूकुमारसिंहजी कासलीवाल, चिरंजीलालजी बक्षी, वसंतभाई दोशी, अशोक दोशी, श्रीमती सीमा जवेरी, मदनलालजी पाटनी, धर्मचंद पाटोदी, राममोहन जैन, अशोक दोशी, शिखरचन्द पहाड़िया, दिनेश परोनीगर, दिनेश पांडेय, पं. प्रदीप जैन 'मधुर', भरत कुमार काला, ज्ञानचंद सेठ, निर्भय डावड़ा, बलभद्र डोटिया, अमृतलाल शाह, राजेश दोशी आदि महानुभाव विराजमान थे। उद्योगपति साहू श्री मुदित जैन, इनकमटैक्स कमिश्नर श्री अंकुर जैन, सर्विस टैक्स डिप्टी कमिश्नर श्री जी.सी.जैन एवं श्री अजित मिंडा भी उपस्थित थे।

भुलेश्वर मंदिर की महिला मण्डल द्वारा मंगलाचरण होकर जिनेन्द्र भगवान की स्तुति गीत हुआ। श्री धर्मचंद पाटोदी ने भ. महावीर जयंती समिति के इतिहास पर प्रकाश डाला। प्रतिष्ठाचार्य पं. प्रदीप जैन 'मधुर' ने भगवान महावीर के जन्मोत्सव पर शास्त्रीय आधार पर विस्तार से प्रकाश डाला। ब्रह्मचारिणी सुसीमा जैन सागर ने इस प्रसंग पर मूक प्राणियों के प्रति दया, करुणा करने की बात कही। बाद में बा. ब्र. गुणमालाबेन का संक्षिप्त परिचय दिया गया।

समस्त मंदिरों के प्रमुख ट्रस्टियों की ओर से बा.ब्र.गुणमालाबेन को शॉल, श्रीफल एवं माला भेंट कर आजीवन उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित किया गया। तालियों की गड़गड़ाहट ने इस सम्मान का स्वागत किया।

- भरतकुमार काला, मुंबई

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं।

दिल्ली नगरिया में फूल अनेक तू भी चुन ले उनमें से एक

मार्च के अन्तिम सप्ताह और अप्रैल के मध्य दिल्ली नगरिया भगवान महावीर की जयन्ती से ऐसी सरोबार हुई कि लगभग 200 मन्दिरों में महावीर जयन्ती पर प्रभात फेरी, संतों के प्रवचन, पूजा-अर्चना, काव्य संध्याओं ने भगवान महावीर के सन्देशों को कंठ में उतार दिया। जब पूरे विश्व में क्रोध, मान, माया, लोभ के अंगार फैल रहे हों तब यहां से देश-विदेश में अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह का सन्देश ने पूरे जनमानस को उद्वेलित कर दिया। धीरे-धीरे अब एक जगह महावीर जयन्ती मनाने का वातावरण बनता जा रहा है। इस सन्दर्भ में दिल्ली जैन समाज की ओर से 2 अप्रैल को फिल्मिस्तान से शोत्रा यात्रा शुरू होकर दिल्ली की सदर व खारी बावली आदि भीड़ भरे मार्गों से होती हुई ऐतिहासिक दिगम्बर जैन लाल मन्दिर पर विशाल धर्मसभा का आयोजन हुआ।

मॉडल बस्ती

जैन समाज दिल्ली की परम्परागत ऐतिहासिक शोभायात्रा दिगंबर जैन मंदिर मॉडल बस्ती से निकाली गई। इसमें अनेक प्रेरक झांकियां, भजन मंडिलियां, स्कूली बैंड शामिल थे। शोभायात्रा पहाड़ी धीरज, सदर, खारी बावली, चांदनी चौक होते हुए भगवान ऋषभदेव (परेड ग्राउंड) में धर्मसभा के रूप में बदल गई। समारोह में दिल्ली जैन समाज के अध्यक्ष चक्रेश जैन, सलेक चंद जैन कागजी, एम. के. जैन, गोपेन्द्र जैन आदि उपस्थित थे। मंच संचालन प्रताप जैन ने किया।

आचार्य श्री श्रुतसागरजी एवं एलाचार्य श्री अतिवीर जी मुनिराज ने भ. महावीर के बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

कुन्द कुन्द भारती

सिद्धांत चक्रवर्ती श्वेत पिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज एवं ऐलाचार्य श्री प्रज्ञ सागरजी ने कहा कि भ. महावीर के सिद्धांत अपनाकर ही सुखा हुआ जा सकता है।

कैलाश नगर

श्री वर्धमान जैन सेवक मंडल के तत्वावधान एवं प.पू. उपा. श्री नयन सागरजी मुनिराज के पावन सान्निध्य में श्री महावीर पार्क, कैलाश नगर में त्रिदिवसीय महावीर जयंती महोत्सव 27 से 29 मार्च तक आयोजित किया गया। 29 मार्च को विशाल शोभायात्रा कृष्णानगर से प्रारंभ होकर कैलाश नगर महावीर स्वामी पार्क पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। शोभायात्रा में अनेक सुंदर झांकियां शामिल हुई।

सूरजमल विहार

प.पू. मुनिश्री तरुण सागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में प्रातः प्रभातफेरी तथा मंदिरजी में मुनिश्री के मंगल प्रवचनों का लाभ प्राप्त किया।

शास्त्री नगर

श्री दि. जैन मंदिर, शास्त्री नगर में सामूहिक रूप से चारों पंथों ने शोभायात्रा निकाली जिसमें बैंड बाजे, झांकियां शामिल थीं। प्रभात फेरी जैन स्थानक से प्रारंभ होकर मुख्य मार्ग एवं बाजारों से होती हुई मंदिरजी पहुंची। मार्ग में जगह-जगह आरती की गई। मंदिरजी में मुनि श्री प्रलब्ध सागरजी व क्षुल्लक जी विराजमान थे। उनके प्रवचनों का लाभ मिला।

भोलानाथ नगर

भ. महावीर जन्म कल्याणक को सेवा दिवस के रूप में मनाकर जैन युवा क्लब ने सराहनीय कार्य किया। इस दिन हृदय रोग जांच, आंखों व हड्डियों की जांच तथा कैंसर जागरूकता का शिविर लगाया। संत निवास भोलानाथ नगर में लगाए गए इस निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर में लगभग 550 लोगों ने लाभ उठाया। आंखों के चश्मे निःशुल्क वितरित किए। शिविर में आए मैट्रो हास्पीटल के कैंसर विशेषज्ञ डा. एच.एम.अग्रवाल तथा हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. अपूर्व मेहरा ने कहा कि वर्तमान में भाग-दौड़ की जिंदगी में स्वास्थ्य से बड़ा कोई धन नहीं है अगर शरीर स्वस्थ होगा तभी हमारा मन भी स्वस्थ रहेगा।

श्री दि. जैन समाज भोलानाथ नगर शाहदरा की ओर से प्रधान नरेन्द्र जैन व मंत्री राजेन्द्र जैन के नेतृत्व में एक प्रभातफेरी प्रातःकाल में महावीर ब्लाक, रामा ब्लॉक व भोलानाथ नगर के विभिन्न क्षेत्रों में निकाली गई। जैन समाज शाहदरा की ओर से एक भव्य शोभायात्रा निकाली।

रानीबाग

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, रानी बाग में भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक महोत्सव का भव्य आयोजन क्षुल्लक श्री विरंजन सागर जी एवं श्री विसौम्य सागर जी महाराज के सान्निध्य में 11-12 अप्रैल को किया गया। 11 अप्रैल को श्री महावीर विधान, सायं महाआरती, पालना झुलाना तथा 12 अप्रैल को भव्य रथयात्रा निकाली गई।

विश्वास नगर गली नं.10

प.पू. मुनि श्री क्षीर सागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में श्री दि. जैन मंदिर रामगली एवं गली नं.10 की संयुक्त वार्षिक रथयात्रा 12 अप्रैल को निकाली।

नवीन शाहदरा

प.पू. आर्यिका श्री दृष्टि भूषण माताजी के पावन सान्निध्य में 12 अप्रैल को श्री महावीर जयन्ती रथयात्रा महोत्सव का आयोजन हुआ।

हमारा धर्म कथनी प्रधान नहीं, करनी प्रधान है।

शक्ति नगर

आचार्य श्री पुण्य सागरजी ससंघ के सान्निध्य में यहां महावीर जयंती के अवसर पर भव्य रथयात्रा निकाली गई।

राम नगर

प.पू. आचार्य श्री सन्मति सागरजी (बड़ेगांव) के परम शिष्य क्षुल्लक श्री योगभूषण जी महाराज के पावन सान्निध्य में 5 अप्रैल को भ. महावीर स्वामी जन्म कल्याणक सम्पन्न हुआ।

गौतमपुरी

श्री दि. जैन मंदिर पाण्डुकशिला, गौतमपुरी में भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव 2015 ऐलाचार्य श्री अतिवीरजी महाराज के सान्निध्य में 4 से 6 अप्रैल तक मनाया गया। श्री 1008 चन्द्र प्रभु वीर सेवा मण्डल के तत्वावधान में 6 अप्रैल को श्री जी की शोभा यात्रा निकाली गई।

अहिंसाधाम

भगवान महावीर चैरिटेबल हैल्थ सेंटर, अहिंसा धाम, मधु विहार में राष्ट्र संत मुनि श्री तरुण सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में अहिंसा धाम की प्रथम वर्षगाँठ व भगवान महावीर जन्मकल्याणक के पावन अवसर पर 6 अप्रैल को डायलिसिस सेंटर का शुभारम्भ व ब्लड डोनेशन कैम्प का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि अहिंसा धाम सेंटर में अनुभवी डॉक्टरों द्वारा ओपीडी, पैथ लेब, एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड, ईसीजी, ईको, आई, डेंटल, होम्योपैथी, आयुर्वेद, फिजयोथिरैपी सहित सारी सुविधायें बहुत ही कम रेट पर उपलब्ध हैं तथा एमआईआर एवं सीटी स्कैन की सुविधा कम रेट पर कराया जाता है। जन-जन के लाभ के लिए मानवता के लिए किये गए कार्य के लिए अहिंसा धाम परिवार निश्चय ही बधाई की पात्र है।

रोहिणी सेक्टर-7

उपाध्याय श्री गुप्तिागरजी के पावन सान्निध्य में 2 अप्रैल को रोहिणी सेक्टर-7 स्थित गोल्डन टैम्पल से शोभायात्रा प्रारंभ हुई जो दोपहर जापानी पार्क पहुंचकर धर्मसभा में तब्दील हो गई, जहां उपाध्याय श्री ने भ. महावीर के सिद्धांतों पर प्रकाश डाला।

जागृति एन्क्लेव

यहां अत्यन्त सुन्दर भव्य श्रीजी की शोभायात्रा निकाली। अध्यक्ष प्रदीप कुमार जैन, सचिव अमित कुमार, अमित जैन, डी.के. जैन, ए.पी. जैन के अनुसार विशाल भण्डारा आनन्द विहार मेन रोड पर लगाया गया।

नैतिक शिक्षण शिविर

महावीर जयंती के अवसर पर दिगम्बर जैन नैतिक शिक्षा समिति द्वारा बच्चों को संस्कार देने हेतु लगभग 60 शिविरों की 17 मई से 28 जून तक व्यवस्था की जाएगी।

गंधोदक जैसा कोई जल नहीं, णमोकार जैसा कोई मंत्र नहीं।
तीरथ जैसी कोई वंदना नहीं, जैन जैसा कोई धर्म नहीं।
जिनवाणी जैसी कोई वाणी नहीं, शिखरजी जैसा कोई तीर्थ नहीं।
गुरु जैसी कोई दौलत नहीं, अरिहंत जैसा कोई भगवान नहीं।

प्रस्तुति - *श्री किशोर जैन*
451, जागृति एन्क्लेव, फेस-II, दिल्ली-92
मो. 9910690823

शक्ति नगर

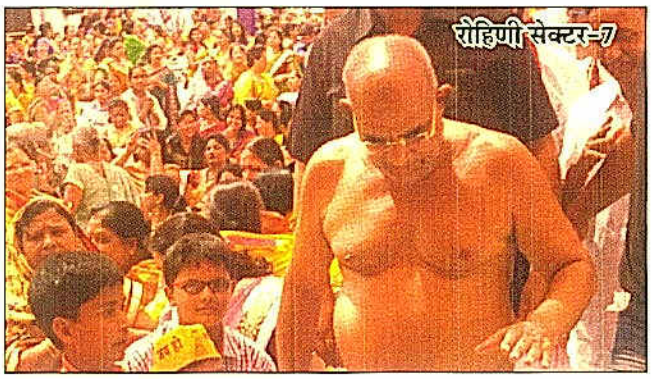
रोहिणी सेक्टर-7

ऋषभ विहार में भंडारा

आनंद विहार जैन सभा द्वारा लगाया गया भंडारा

संतो हि हितभाषिणः (उत्तरपुराण, पर्व 70, श्लोक 325) । अर्थ- साधु-संत आत्महित का उपदेश देते हैं ।

खतौली में भगवान् महावीर जन्मकल्याणक दिवस के उपलक्ष्य में धार्मिक विचारों की अद्वितीय प्रभावना

पू. क्षुल्लक श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी एवं श्री बाबा भगीरथ जी वर्णी की विद्याप्रसार भावना से ओतप्रोत, उनके प्रवास से सनाथ धर्मनगरी खतौली (जिला–मुजफ्फरनगर) उ.प्र. में तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी जन्मकल्याणक दिवस का पंचदिवसीय आयोजन दि. 29 मार्च से 2 अप्रेल,2015 तक आचार्य श्री भारतभूषण जी महाराज, पूर्वाचार्य श्री त्रिलोकभूषण जी महाराज एवं एलाचार्य श्री क्षमाभूषण जी महाराज के सान्निध्य में श्री 1008 पद्मप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर समिति द्वारा किया गया। व्याख्यान संयोजक द्वय डॉ. कपूरचन्द जैन एवं डॉ. ज्योति जैन के आग्रह एवं समाज के आमंत्रण पर श्रीमान् पं. रतनलाल बैनाड़ा (आगरा), प्रो. वीरसागर जैन (नई दिल्ली), कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन, महामन्त्री–श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् (बुरहानपुर), श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर' (सनावद) के एक एक दिन विशेष व्याख्यान धर्मसभा में हुए। विद्वानों का परिचय डॉ. कपूरचन्द जैन एवं डॉ. ज्योति जैन ने दिया।

ब्र. अभय जैन (इन्दौर) एवं संगीतकार श्री नीलेश जैन (बुढ़ार) के निर्देशन में प्रतिदिन मण्डल विधान एवं भजनोपदेश हुए। स्थानीय दि. जैन महिला महासमिति, जैन मिलन तथा अन्य संगठनों ने प्रतिदिन रोचक नृत्य नाटिका, भजनसंध्या आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। श्री अरुण जैन (नगली), श्री अजय जैन (शिक्षक), श्री नीरज जैन ने उत्साह से व्यवस्था में सहयोग दिया। दि. 2 अप्रेल को भगवान् महावीर स्वामी की भव्य रथयात्रा निकाली गयी।

दि. 1 अप्रेल,2015 को दोपहर में श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् एवं अ.भा.जैन पत्र सम्पादक संघ के महामन्त्री कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती' ने श्रीमती ज्योति जैन द्वारा आमंत्रित पत्रकार–वार्त्ता को सम्बोधित किया और बताया कि विश्व में शाति की स्थापना के लिए भगवान् महावीर स्व. द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, अपरिग्रह एवं अनेकान्तवाद तथा सर्वोदय के सिद्धान्त जरूरी हैं। यह बात अब विश्वमंचों से प्रमाणित हो चुकी है। शाकाहार (जैन भोजन) के प्रति लोगों की रुचि बढ़ रही है। डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन ने खतौली में रहकर जैनधर्म की प्रभावना करने के लिए डॉ. कपूरचन्द जैन एवं डॉ. ज्योति जैन के अवदान की प्रशंसा की और पत्रकारों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दिये।

इस अवसर पर डॉ. ज्योति जैन के नेतृत्व में स्थानीय दि. जैन महिला महासमिति ने पार्श्व ज्योति (मासिक पत्रिका) की प्रकाशक श्रीमती इन्द्रा जैन (बुरहानपुर) का सम्मान किया। सभी विद्वानों का समाज की ओर से संयोजक–श्री रामकुमार जैन, श्री सतीश जैन, श्री राकेश जैन, डॉ. कपूरचन्द जैन आदि के द्वारा स्मृति चिह्न आदि से सम्मान किया गया।

विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष एवं महामन्त्री द्वारा पंचतीर्थों का अवलोकन

श्री अ.भा.दि. जैन विद्वत्परिषद् (रजि.) के अध्यक्ष डॉ. जयकुमार जैन (मुजफ्फरनगर) एवं महामन्त्री कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती' (सम्पादक –जैन तीर्थवंदना) ने दि. 1 से 3 अप्रेल, 2015 तक श्री पार्श्वनाथ दि. जैन अतिशय क्षेत्र, बहलना (जिला–मुजफ्फरनगर), श्री चन्द्रप्रभ दि. जैन अतिशय क्षेत्र महलका, श्री पार्श्वनाथ दि.जैन अतिशय क्षेत्र, वरनावा (जिला–बागपत), श्री पार्श्वनाथ दि.जैन अतिशयक्षेत्र एवं त्रिलोकतीर्थ धाम, बड़ागांव (जिला–बागपत) तथा श्री दि.जैन अतिशय क्षेत्र हस्तिनापुर–प्राचीन बड़ा मन्दिर, कैलाशपर्वत, जम्बूद्वीप, अष्टापद, तीनों नसियां जी आदि का अवलोकन एवं वंदना की। उनके साथ श्रीमती प्रसन्न जैन (मुजफ्फरनगर) एवं श्रीमती इन्द्रा जैन (बुरहानपुर) भी थीं।

वरनावा में 'श्री ज्ञानसागर गुरुकुल' के संचालक / अधिष्ठाता श्री ब्र. अतुल भैया ने गुरुकुल का अवलोकन कराया तथा बताया कि किस प्रकार वहाँ आधुनिक लौकिक शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षण, सांस्कृतिक प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक शिक्षा दी जाती है। छात्रावास, भोजन की सुन्दरतम व्यवस्था है। समाज को इस गुरुकुल को अधिकाधिक आर्थिक सहयोग एवं संबलप्रदान करना चाहिए।

विद्वानों ने वरनावा में यह भी देखा कि पुराने मन्दिर की दीवालों आदि को हटाकर विशाल मन्दिर का निर्माण किया जा रहा है। समय, संसाधनों को देखते हुए यह उचित ही प्रतीत होता है। क्या कुण्डलपुर, नागपुर, ललितपुर आदि के मन्दिरों का विरोध करने वाले इससे कुछ सबक सीखेंगे। बड़ागांव के श्री पार्श्वनाथ मन्दिर का तो कायाकल्प देखते ही बनता है।

बड़ागांव में श्री त्रिलोकतीर्थ धाम की वंदना वहाँ के प्रतिष्ठाचार्य श्री पं. अशोक जैन, प्राकृताचार्य ने करवायी और सम्पूर्ण व्यवस्थाओं का परिचय दिया। इतने विशाल तीर्थ के निर्माण के बाद अब उसके संरक्षण की, और उसके लिए निरन्तर धन की आवश्यकता होगी।

आजकल आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक आदि के चरण चिन्हों की जो स्थापना प्रारंभ हुई है इसका शास्त्रों में तथा परमपरा में उल्लेख नहीं मिलता। क्या यह प्रवृत्ति उचित है इस पर आचार्यों को विचार करना चाहिए।

तीर्थंकर / चक्रवर्ती / कामदेव श्री शान्तिनाथ, श्री कुन्थुनाथ, श्री अरनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर का तो 30 वर्ष में कायाकल्प ही हुआ है। विशाल मन्दिरों के प्रतिस्पर्द्धात्मक निर्माण ने यह स्थिति पैदा कर दी है कि चाहते हुए भी पूरे, मन्दिरों एवं वेदियों के दर्शन करना हीन संहनन धारियों के बस की बात नहीं रह गयी है। क्या ही अच्छा हो कि अब वहाँ मन्दिर भले ही न बनें किन्तु ज्ञान, ध्यान की अच्छी व्यवस्था होना चाहिए। श्री दि. जैन उत्तरप्रान्तीय गुरुकुल के 130 विद्यार्थियों द्वारा आरती / भजन का दृश्य देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। यहाँ क्षेत्र निवासी पं. विजयकुमार जी जैन, पार्श्व ज्योति प्रतिनिधि पं. प्रमोदकुमार जैन, पं. महेन्द्रकुमार जैन (प्राचार्य–आत्माराम हा.से.स्कूल), पं. संदीप जैन, पं. आशीष जैन, पं. अरुण जैन आदि से सार्थक चर्चा हुई।

हमारे तीर्थ जैनत्व की भावना के प्रतिपादक बनें, धन के प्रदर्शक आयतन नहीं। यह आज की जरूरत है। सभी धर्मावलंबियों को पश्चिमी उत्तरप्रदेश के इन पंचतीर्थों की वंदना अवश्य करना चाहिए।

–श्रीमती इन्द्रा जैन,बुरहानपुर

रचित कोठ्यारी को आई.आई.एम. बेंगलौर में प्रथम रैंक एवं गोल्ड मेडल

भारत के श्रेष्ठतम् प्रबंध संस्थानों में से एक भारतीय प्रबंध संस्थान (आई.आई.एम.), बेंगलौर द्वारा श्री रचित कोठ्यारी पुत्र श्री राजकुमार कोठ्यारी, जयपुर को संस्थान में प्रथम स्थान एवं गोल्डमेडल प्रदान किया गया है। यह गोल्डमेडल संस्थान के 40वें वार्षिक दीक्षांत समारोह दिनांक 27 मार्च 2015 को मुख्य अतिथि नारायणा हेल्थ के चेयरमैन पदम्श्री डॉ. देवी प्रसाद शेट्टी के कर कमलों द्वारा प्रदान किया गया।

रचित आई.आई.एम. बेंगलौर के दो वर्षीय स्नात्कोत्तर पाठ्यक्रम के छात्र रहे तथा उन्होंने 2012 में केट परीक्षा उत्तीर्ण कर संस्थान में प्रवेश लिया।

रचित कोठ्यारी ने इससे पूर्व आई.आई.टी. खडगपुर से इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त की है तथा सेंट जेवीयर स्कूल, जयपुर से सी.बी.एस.सी. माध्यम से 10वीं व 12वीं में टॉपर रहे हैं।

समग्र दिगम्बर जैन समाज के लिये उक्त उपलब्धि गौरव का विषय है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री रचित कोठ्यारी एवं उनके परिजनों को इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देती है तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

– चिंतामणी बज, मुम्बई

मंगलमय पाँचों कल्याणक, मंगल जिनशासन उद्देश मंगलमय निर्वाणभूमि, मंगलमय अतिशय क्षेत्र विशेष ।। (पं. राजमल पवैया)

जैन समाज की हस्तियों को मिला राष्ट्रीय सम्मान, समाज गौरवान्वित

कर्नाटक के तीर्थ धर्मस्थल के धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्र जी हेगड़े को 'पद्म विभूषण' एवं श्री राहुलजी जैन, श्री रविन्द्रजी जैन, श्री संजयजी लीला भंसाली, श्री वीरेन्द्र राज मेहता, श्री मीठालाल मेहता एवं श्री तारक मेहता को 'पद्मश्री' के अलंकरण से महामहिम राष्ट्रपतिजी द्वारा सम्मान।

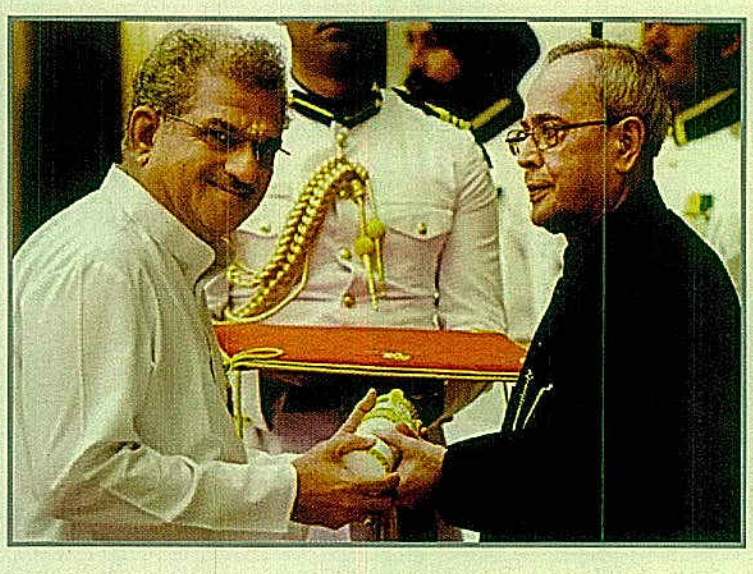

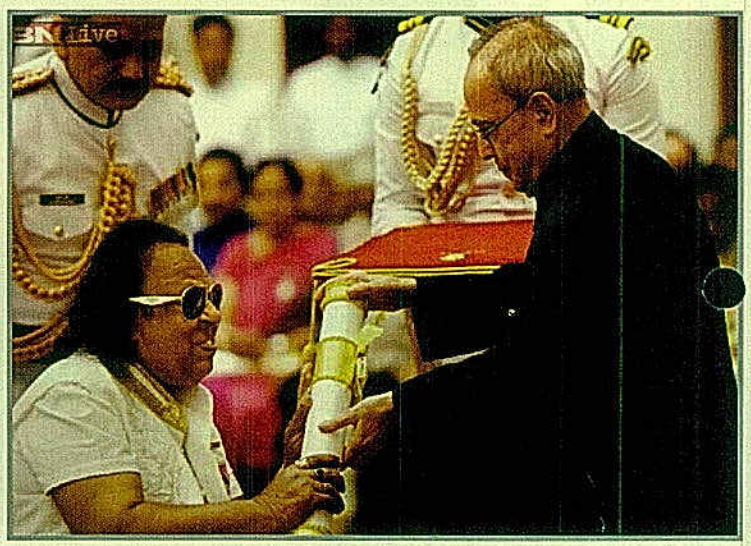

भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रणब मुखर्जी ने राष्ट्रपति भवन में बुधवार दिनांक 8 अप्रैल, 2015 को आयोजित एक भव्य समारोह में देश की प्रख्यात हस्तियों को 'पद्म विभूषण' एवं 'पद्मश्री' के अलंकरण से सम्मानित किया गया। कर्नाटक प्रांत के प्रमुख तीर्थ धर्मस्थल के धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्रजी हेगड़े का देश के सर्वोच्च सम्मान 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया गया। श्री वीरेन्द्रजी हेगड़े ने समाजसेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। आपके द्वारा आयुर्वेद, नेच्युरोपैथी, डेन्टल, इंजीनियरिंग, मेडिकल, कानून एवं बिजनेस मैनेजमेंट के 40 शिक्षण संस्थान संचालित किये जाते हैं। आपके द्वारा गांव में रोजगार तथा प्रतिभा प्रोत्साहन पर भी बहुत कार्य किया गया है। मंदिरों के संरक्षण के साथ-साथ नशामुक्ति के कार्य में भी आपका महत्वूपर्ण योगदान है।

प्रशासनिक अधिकरी स्व.श्री मीठालाल मेहता एवं श्री वीरेन्द्र राज मेहता को भी इस वर्ष 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया है। प्रमुख फिल्म डायरेक्टर श्री संजय लीला भंसाली एवं संगीत निर्देशक श्री रविन्द्र जैन को भी अपने क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त करने पर महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा 'पद्मश्री' अलंकरण से सम्मानित किया गया है। तारक मेहता का उल्टा चश्मा सीरियल के प्रमुख पात्र श्री तारक मेहता एवं परम्परागत टेक्सटाईल आर्ट्स ऑफ इंडिया के प्रमुख विशेषज्ञ श्री राहुल जैन को भी 'पद्मश्री' अलंकरण प्रदान किया गया है।

जैन समाज की इन सातों प्रमुख हस्तियों को राष्ट्र द्वारा सम्मानित होने पर भारत का समस्त जैन समाज गौरवान्वित है। भारत का सिर्फ 0.4 प्रति आबादी का हिस्सा होते हुए भी इस ... के पद्म पुरस्कारों में 7 प्रतिशत पुरस्कारों को प्राप्त करने का पुरुषार्थ किया है। 94.1 प्रतिशत पढ़े-लिखे लोगों के साथ जैन लोग भारत में सबसे अव्वल हैं। जैनों में भारत का नाम दुनिया में रोशन करने वालों में भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के पितामह श्री विक्रम साराभाई मेहता, हिन्दी साहित्य के अनमोल रत्न श्री बनारसीदासजी, भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार के जनक श्री साहूजी शामिल हैं। देश के प्रमुख समाचार पत्रों में इस पर विशेष टिप्पणी करते हुए जैन समाज का गौरव बढ़ाया है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार उपरोक्त सभी हस्तियों को बधाई प्रेषित करते हुए जैन समाज का नाम रोशन करने पर धन्यवाद ज्ञापित करता है।

PADMA VIBHUSHAN DR. D. VEERENDRA HEGGADE ACCORDED WARM WELCOME AT DHARMASTHALA

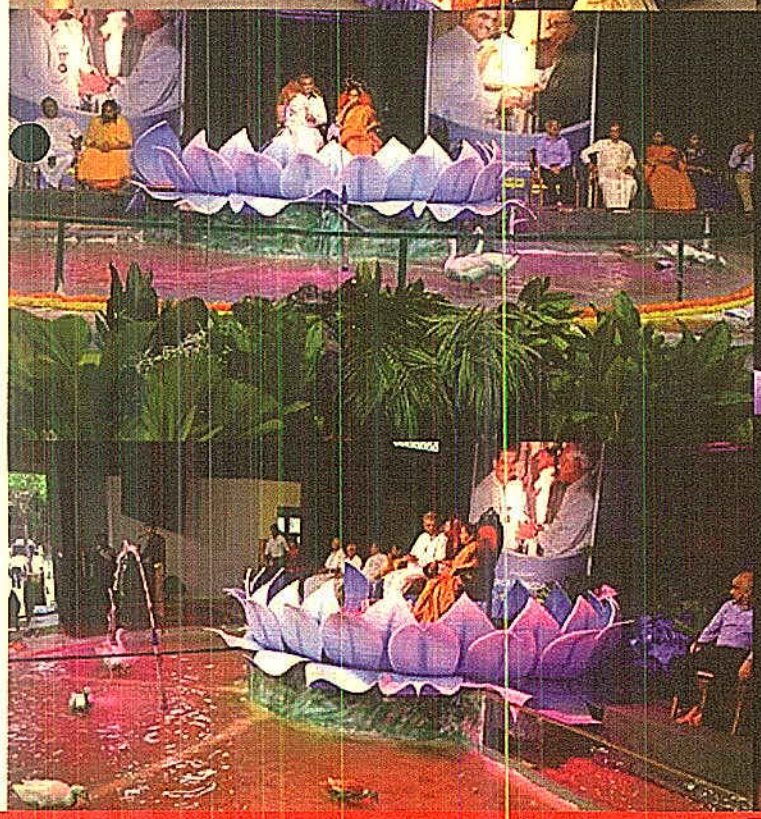

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

विदेशों में स्थित जैन मंदिर

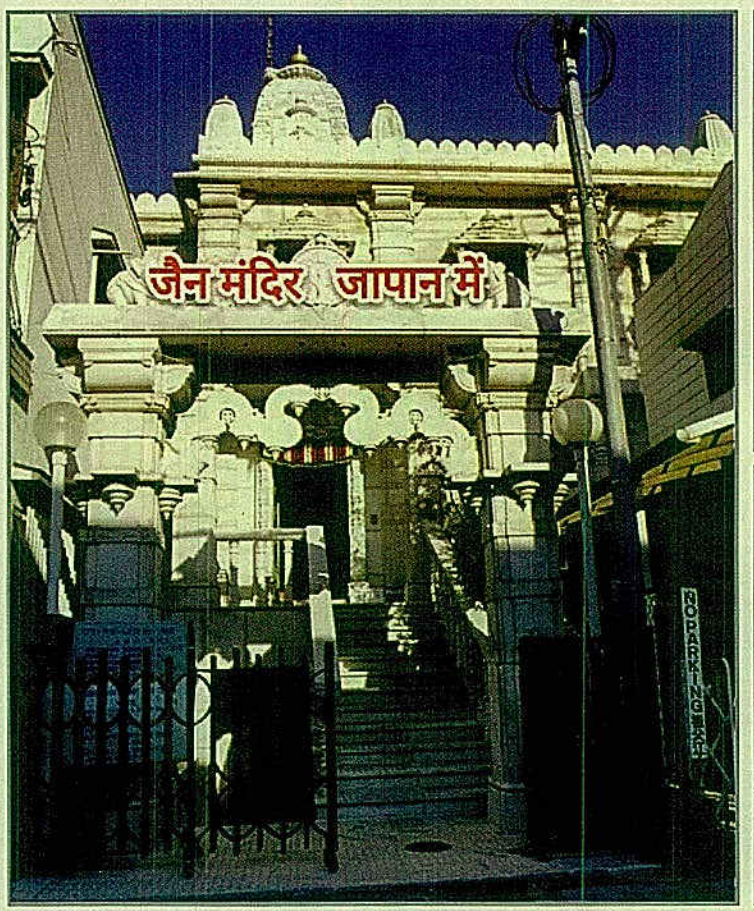

1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर न्यूयॉर्क

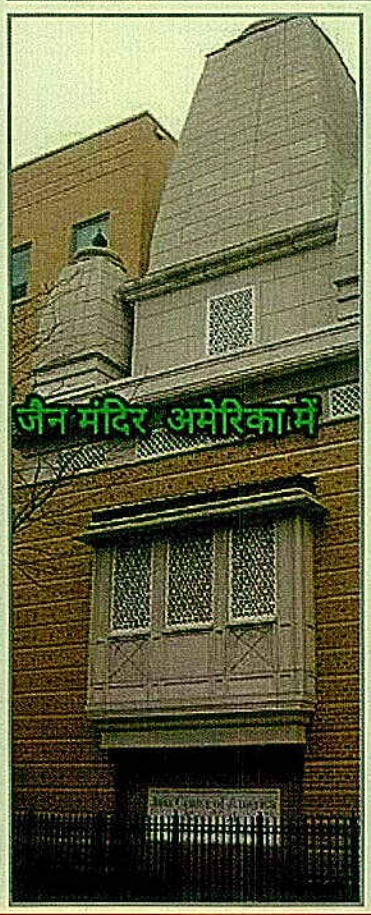

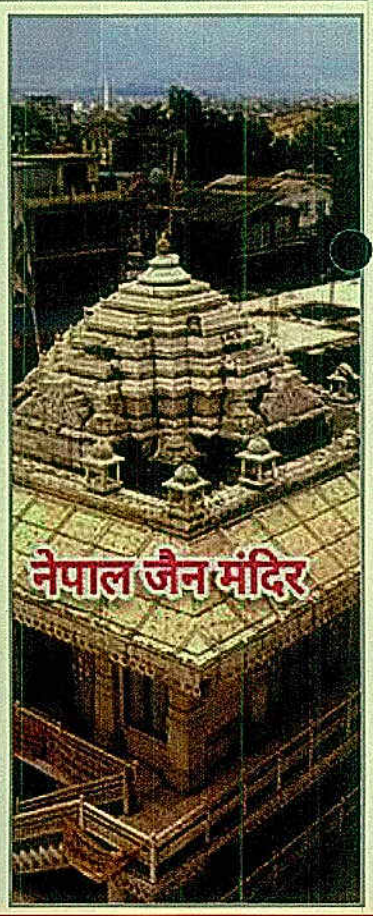

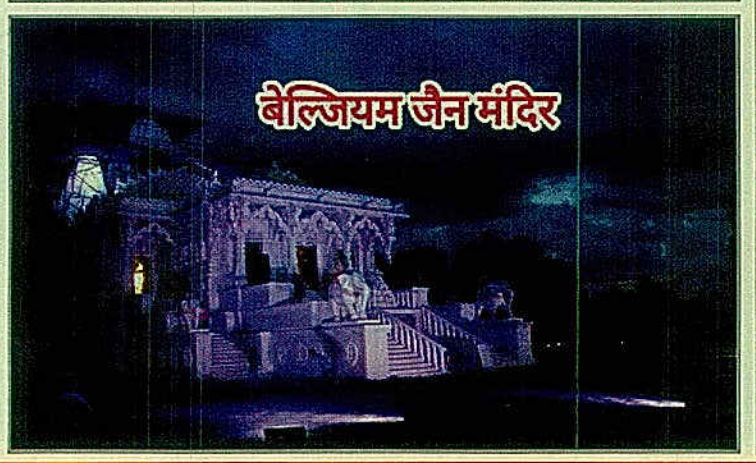

जैन धर्म में तपतीर्थ, ज्ञानतीर्थ, संयमतीर्थ आदि कहे गये हैं

जल्दी ही विश्व के मानचित्र पर दिखेगा मधुबन (शिखरजी) : मुख्य सचिव झारखण्ड सरकार

गिरिडीह : नक्सलियों के गढ़ और भगवान पार्श्वनाथ की तपोभूमि मधुबन में शनिवार को रात्रि के मुख्य सचिव राजीव गौबा के नेतृत्व में पूरी सरकार पहुंची, जिसमें डीजीपी समेत तमाम विभागों के प्रधान सचिव व सचिव मौजूद थे। प्रशासन की ओर से आयोजित इस जनसंवाद कार्यक्रम में मुख्य सचिव राजीव गौबा ने कहा कि पारसनाथ-मधुबन तीर्थक्षेत्र को विश्वस्तर का तीर्थ नगरी और पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। इस दिशा में सरकार की इच्छाशक्ति प्रबल है। सरकार के इस प्रयास में जनता का सहयोग अपेक्षित है। वे शनिवार 11 अप्रैल, 2015 को विश्व प्रसिद्ध तीर्थस्थल मधुबन स्थित कल्याण निकेतन परिसर में पारसनाथ डेवलपमेंट प्लान पर आयोजित प्रशासनिक बैठक में जानकारी दी।

इससे पहले सुबह सवा दस बजे मुख्य सचिव गौबा और डीजीपी डीके पांडेय सहित कई विभागों के सचिव स्तर के अधिकारियों को लेकर सेना का हेलिकॉप्टर मधुबन पहुंचा। यहां उपायुक्त डॉ. एसके वर्मा और एसपी कुलदीप द्विवेदी ने अधिकारियों का गर्मजोशी से स्वागत किया।

इसके बीच दस मिनट बाद कल्याण निकेतन स्थित सीआरपीएफ कैंप में पारसनाथ डेवलपमेंट प्लान को लेकर बंद कमरे में अधिकारियों की मैराथन बैठक शुरू हुई।

बाद में प्रशासनिक अमला बारह बजे के करीब बाहर आया। कल्याण निकेतन परिसर में ही मुख्य सचिव ने स्थानीय लोगों से संवाद स्थापित करने के लिए खुली बैठक की जिसमें मधुबन के विभिन्न जनसंगठन सहित जैन संस्थाओं की ओर से सरकार के समक्ष वहां की मूलभूत समस्याओं को रखा गया। मुख्य सचिव सहित राज्य प्रशासन का पूरा अमला लोगों को घंटो सुनता रहा।

बाद में डीजीपी पांडेय ने जैन श्रद्धालुओं की मांग पर पारसनाथ स्टेशन से मधुबन तक रात में विशेष गाड़ी की व्यवस्था सुनिश्चित करने का भरोसा दिया। डीजीपी ने कहा कि इस मामले में आइजी तदाशा मिश्र पूर्व में ही धावाटांड में रोड अपराध को लेकर अधिकारियों को निर्देश दे चुकी हैं। मुख्य सचिव ने भी लोगों को कोरा आश्वासन देने के बाद सतह पर काम करके दिखाने का भरोसा दिया।

मुख्य सचिव ने कहा कि सरकार पारसनाथ डेवलपमेंट प्लान के लिए फंडिंग की व्यवस्था कर रही है। पारसनाथ से सटे गांवों में बिजली, पानी, सड़क, रोजगार के अवसर, पारंपरिक खेती और व्यवसाय सहित अन्य पहलुओं पर व्यापक कार्ययोजना तैयार की गयी है। जिला प्रशासन के माध्यम से कार्ययोजना को धरातल पर उतारा जाएगा। उन्होंने इसके लिए कोई टाइम लाइन की घोषणा तो नहीं की लेकिन इतना अवश्य कहा कि सरकार की इच्छाशक्ति प्रबल है। जनता का सहयोग मिला तो इस कार्ययोजना को काफी कम समय में पूरा कर राज्य फलक पर मॉडल के रूप में इसे स्थापित किया जाएगा। मौके पर पीसीसीफ बीसी निगम, ग्रामीण विकास विभाग के सचिव एएन सिन्हा, वन सचिव अरुण कुमार सिंह, पीएचईडी के सचिव एपी सिंह, आरईओ के मस्तराम मीणा, एडीजी ऑपरेशन एसएन प्रधान, सीआरपीएफ के कमांडेंट पीएस कैले, डीआइजी उपेन्द्र कुमार, प्रशिक्षु आइएएस शशि रंजन, प्रशिक्षु आईपीएस अंशुमान कुमार, एएसपी अभियान कुणाल, डीएसपी वन विजय ए कुजूर, आरके मेहता, शंभु कुमार सिंह, एसी आरके सिंह, डीएफओ स्मिता पंकज, डुमरी एसडीओ पवन मंडल, डीएसओ रामचंद्र पासवान, डीआरडीए के निदेशक अवध नारायण प्रसाद, डीपीओ डीके गौतम, पीरटांड बीडीओ विकास कुमार राय, डुमरी सीओ अनिता कुजूर सहित भारी संख्या में प्रशासनिक अधिकारी मौजूद थे।

जनसंवाद में सरकार ने सुनी व्यथा

मधुबन को अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने सहित यहां विकास कार्यों को विशेष अभियान चलाकर तेज करने के संकल्प के साथ सूबे के आला अधिकारियों की टीम ने मधुबन में जनसंवाद कार्यक्रम में स्थानीय लोगों की समस्याएं सुनी। सरकार के मुख्य सचिव राजीव गौबा ने कहा कि राज्य सरकार ने पारसनाथ के विकास के लिए खाका तैयार कर लिया है। यह प्रक्रिया जिला प्रशासन के माध्यम से पूरी की जाएगी।

मुख्य सचिव कल्याण निकेतन में स्थित सीआरपीएफ कैंप में आयोजित जनसंवाद कार्यक्रम में बोल रहे थे। कार्यक्रम में सरकार के कई विभागों के सचिव मौजूद थे। उनके समक्ष पारसनाथ एक्शन प्लान के तहत चयनित गांवों के प्रतिनिधियों ने अपनी अपनी समस्या रखी और सरकार ने इसका हरसंभव तुरंत निदान करने की बात कहीं।

इस दौरान मधुबन सहित कई गांव के लोगों ने मधुबन के विकास में आड़े आ रही समस्याओं को रखा। जैन संस्था के कमल सिंह रामपुरिया ने यहां की मुख्य समस्या में रेलवे रूट से जोड़ने की मांग की। बीसपंथी कोठी के श्री महावीर प्रसाद सेठी ने सड़क, बिजली, पानी, शौचालय एवं मधुबन (शिखरजी) को मांस, मदिरा पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाये जाने पर जोर दिया। श्री सतेन्द्र जैन ने मधुबन में डोली मजदूरों के लिए रैन बसेरा, शौचालय, पेयजल की सुविधा के साथ स्वास्थ्य, सड़क समस्या के निदान को लेकर 24 घंटे महिला चिकित्सक की व्यवस्था को लेकर आवाज उठायी।

- सुमन कुमार सिन्हा

प्रबंधक - शिखरजी कार्यालय, मधुबन

दर्शन ज्ञान और चारित्रवान सभी जिनेश्वर भावतीर्थ हैं (मूलाचार, गा.562)

बैठक की झलकियाँ

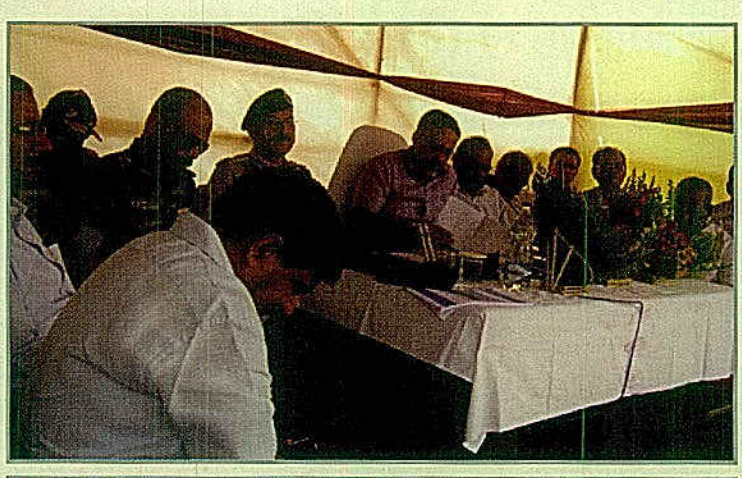

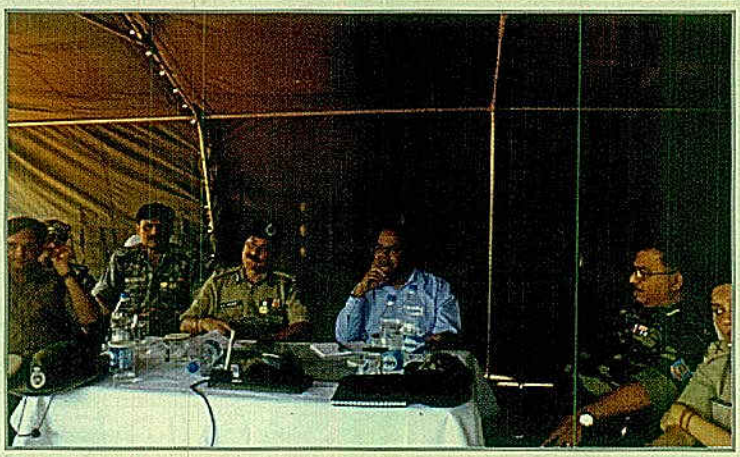

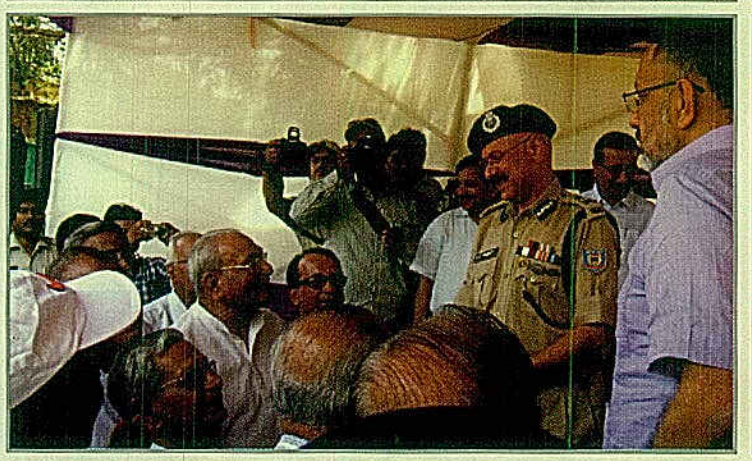

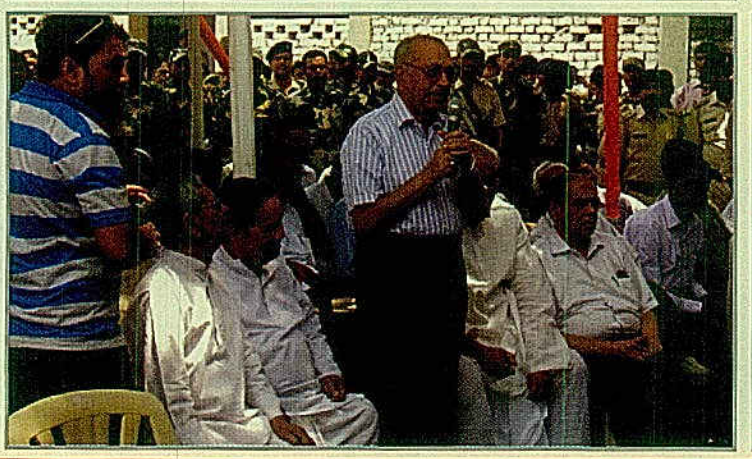

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल एवं सन्मति सेवा दल की ओर से श्री सम्मेदशिखर स्वच्छता अभियान

अकलूज, जिला- सोलापुर । दिनांक 2/2/2015 को अकलूज गांव से अनादि निधन परम पवित्र सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखरजी एवं पहाड़ की पवित्रता रखने के लिए 75 युवक-युवती सम्मेदशिखर जी की ओर प्रस्थान किये। उनको शुभेच्छा एवं बधाई देने के लिए भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष धर्मानुरागी श्री अनिल जमगे एवं संयुक्त मंत्री श्री रविन्द्र कटके, श्री वालचंद जी पाटील, श्री वैभव पाटील ट्रस्टी कुमठा, इनकी उपस्थिति में और श्री नीलमकुमारजी अजमेरा, श्री बाबूभाई गांधी, श्री प्रमोदजी कासलीवाल, श्री संतोष जी पेंढारी, श्री फडे, श्री नेमचंदजी आग्रे एवं सन्मति सेवादल के अध्यक्ष श्री मेहरजी गांधी, इनके मार्गदर्शन पर भगवान महावीर जी दिगम्बर जैन मंदिर के प्रवचन हॉल में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इन युवक-युवती को श्री अनिल जी जमगे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के उपाध्यक्ष की ओर से स्वल्पाहार एवं स्वच्छता अभियान के प्रमुख कार्यकर्ता श्री मेहरजी गांधी को शॉल-श्रीफल-पुष्पहार से सम्मानित किया गया। उनकी यात्रा सफल होने के लिए उन्हें अहिंसा का पंचरंगी ध्वज फहराकर सम्मानित किया गया। इस मांगलिक कार्यक्रम के लिए सैकड़ों श्रावक-श्राविका उपस्थित रहे।

संकलनकर्ता : नेमचंदजी आग्रे, सोलापुर

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं ।

एक श्रावक के उत्कृष्ट उद्गार

23.3.2015

प्रेषक : रमेशचन्द्र दोशी
70- कल्पतरु ओस्टवाल नगर
सुन्दरवास, उदयपुर - 313 001

आदरणीय श्रीमान् अध्यक्ष महोदय जी,

सादर जय जिनेन्द्र।

जैन तीर्थ वंदना अंक 5 मार्च, 2015 में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष होते हुए बिना किसी लाग-लपेट के आपने अपने भावों को लिखकर जो साहस का परिचय दिया है वह सराहनीय है।

मैं एक अल्प बुद्धि वाला (अल्पज्ञ) मध्यम परिवार का आपके विचारों से शत प्रतिशत सहमत हूँ एवं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि हमारे अध्यक्ष श्रीमान् सुधीर जैन सा. के संकल्प को गति प्रदान कर उनको उनके उद्देश्य में सफलता प्रदान करावें।

आपके द्वारा लिखा कथन :- **'बूंद-बूंद के मिलन से, जल में गति आ जाय,**
सरिता बन सागर मिले, सागर बूंद समाय।

इसका ज्वलन्त उदाहरण पेश करता हूँ :-

अजमेर (राजस्थान) में संत शिरोमणि आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज के परम शिष्य पूज्य मुनि पुंगव 'श्री सुधा सागर' जी महाराज ने समाज के सामने अपने विचार रखे और कहा कि अजमेर में एक नारेली 'ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र' का निर्माण करवाने में समाज के प्रत्येक परिवार का योगदान होना चाहिए, चाहे वह गरीब हो या अमीर हर परिवार इसमें शामिल हो, इसके लिए प्रत्येक घर से 'एक ग्राम से लेकर अन-लिमिटेड वजन के टूटे-फूटे तांबे, पीतल के बर्तन, सोने-चांदी या धतु का स्क्रेप एकत्रित करवा कर मूर्तियों का रूप दिया जाय, जिससे कोई भी परिवार इस तीर्थक्षेत्र के निर्माण के सहयोग से वंचित न रहे। आज वह तीर्थक्षेत्र एक भव्य सागर के रूप में खड़ा है जिसे देख कर उस गरीब परिवार को फख्र होता है कि मेरा 'एक ग्राम स्क्रेप' मुनिश्री सुधा सागरजी महाराज की कृपा व सूझबूझ से मूर्ति बन कर नारेली ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र की शान व पूजने योग्य सागर के रूप में एक विशाल तीर्थक्षेत्र बनकर उभरा है। इसी तरह आप भी अपने भावों को गति प्रदान कर अपने संकल्प को पूरा करें।

हमारे भारतवर्ष में जैन समाज जिसमें सभी जैन समाहित हो, चाहे वे दिगम्बर, श्वेताम्बर, मूर्ति पूजक या स्थानकवासी हो, गरीब, मध्यम या अमीर परिवार हो, जैन छात्रावास बनाने में सभी परिवारों का योगदान रहे व सबको उसमें प्रवेश मिले, इसके लिए एक सुझाव है कि अगर प्रत्येक परिवार से 10 रुपये (दस रुपये) प्रति व्यक्ति के हिसाब से सहयोग राशि के रूप में एकत्रित करे तो यह राशि करोड़ों में हो सकती है।

भारत की जनसंख्या 125 करोड़ के आसपास है इसमें जैनियों की संख्या 0.4 प्रतिशत भी माने तो कुल जैनियों की संख्या 125 X.4 प्रतिशत = 500/1000 = .5 करोड़

अतः कुल सहयोग राशि @ 10 रु. प्रति जैन = 0.5X10 करोड = 5 करोड रुपये

प्रति वर्ष 5 करोड़ रुपये सहयोग राशि एकत्रित कर सकते हैं। गरीब से गरीब व्यक्ति भी 10 रु. की राशि आसानी से दे सकता है। इसके अलावा हमारे देश-विदेश में अनेक समाज सेवी दानदातारों से सहयोग राशि प्राप्त कर सकते हैं जिसे मिलाकर कई करोड़ रुपया सहयोग राशि के रूप में एकत्रित हो सकती है। सिर्फ आवश्यकता है इसे मूर्त रूप देने की जिसके लिये आप व आपके सहयोगी पूर्ण रूप से सक्षम हैं।

इसी सुझाव के साथ आपके संकल्प को गति प्रदान करने हेतु प्रतिक्रिया स्वरूप एक छोटी सी सहयोग राशि चेक द्वारा प्रेषित कर रहा हूँ जो कि सूर्य के सामने टिमटिमाते दीपक के समान है जिसका सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित ब्रह्माण्ड में कहीं कोई अस्तित्व नहीं है कृपया स्वीकार कर हमें इस शुभ कार्य में सहयोगी बनने का सौभाग्य प्रदान कर अनुग्रहीत करें।

जय जिनेन्द्र।

शुभ कामनाओं के साथ
(दोशी परिवार)
रमेशचन्द्र - उर्मिला जैन, विकास - दीपानी जैन
श्रेया एवं नित्या जैन
मो.नं. 09413752762

मनुष्य ने जो वस्तु छोड़ दी है, उससे पैदा होने वाले दुःख से उसने अपने को मुक्त कर लिया है (तिरुवल्लूर)

साहित्य वाचस्पति महोपाध्याय विनयसागरजी को राष्ट्रपति सम्मान

प्राकृत भाषा के मूर्धन्य विद्वान साहित्य वाचस्पति महोपाध्याय विनयसागरजी को भारत सरकार ने **राष्ट्रपति सम्मान प्रमाण पत्र पुरस्कार** से सम्मानित किया। महोपाध्याय विनयसागरजी न केवल प्राकृत भाषा के ही परम्परागत प्रौढ़ विद्वान थे अपितु संस्कृत वांगमय एवं जैन आगम के मनीषी तथा मौलिक चिंतक थे। आपके द्वारा लिखित, सम्पादित व अनुवादित 103 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आप प्राकृत भारती अकादमी संस्थान के स्थापना वर्ष 1977 से ही जीवनपर्यन्त सम्मान्य निदेशक पद पर रहे। नियतिवश पुरस्कार प्राप्त करने से पूर्व ही 30 नवम्बर, 2014 को आपका देहावसान हो गया था। अतः यह सम्मान ग्रहण करने हेतु उनके पुत्रों मंजुल व विशाल जैन को आमंत्रित किया गया।

दिनांक 23/3/2015 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में उनके पुत्र मंजुल जैन ने राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के कर-कमलों से यह सम्मान ग्रहण किया।

प्राचार्य निहालचन्द जैन- बीना सम्मानित हुए

नई दिल्ली। कुन्दकुन्द भारती में दिनांक 8 मार्च, 2015 को श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंदजी मुनिराज के सान्निध्य में अहिंसा इंटरनेशनल पुरस्कार 2014 के भव्य समारोह में पं. निहालचंद जैन को अहिंसा इंटरनेशनल श्री जिनेन्द्रवर्णी जैनधर्म प्रचार-प्रसार पुरस्कार प्रदत्त किया गया। इसी प्रकार दूसरा पुरस्कार 'श्री श्यामसुन्दरलाल शास्त्री श्रुतप्रभावक न्यास-रईधू पुरस्कार वर्ष 2015' महावीर जयंती के सुअवसर पर फिरोजाबाद (उ.प्र.) जैन मेला में प्रदत्त किया गया।

उल्लेखनीय है कि पं. निहालचंद जैन, जैनदर्शन की वैज्ञानिकता के सुप्रतिष्ठित लेखक और प्रवचनकार हैं। आपने अभी तक 18 पुस्तकों का सृजन व सम्पादन किया है, जिसमें कई पुस्तकें पुरस्कृत भी हैं। शताधिक विद्वत्संगोष्ठियों में सहभागिता और संयोजन कर जैनधर्म के प्रचार-प्रसार में बहुमूल्य योगदान दिया है।

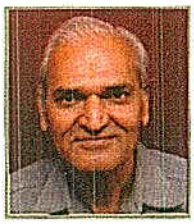

वर्तमान में आप- वीर सेवा मंदिर शोध संस्थान दरियागंज, नई दिल्ली के निदेशक के रूप में जैन साहित्य के शोधार्थियों और नवोदित विद्वानों को मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। इसके पूर्व भी आप अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं।

वीर सेवा मंदिर के अध्यक्ष एवं सभी पदाधिकारियों की ओर से हार्दिक बधाई देते हुए आपके स्वस्थ एवं दीर्घायु की मंगल कामना करता है।

- वी.के.जैन, महामंत्री
वीर सेवा मंदिर, नई दिल्ली

श्री क्षेत्र जटवाड़ा में भक्तिभाव से मनाया गया अमावस्या

श्री 1008 संकटहर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र जैनगिरि जटवाड़ा में 20 मार्च को फाल्गुन अमावस्या के अवसर पर मूलनायक श्री संकटहर पार्श्वनाथ भगवंत का पंचामृत अभिषेक किया गया।

कार्यक्रम के अनुसार सुबह 10 बजे बोलियों के बाद 11 बजे मूलनायक श्री संकटहर भगवंत का पंचामृत अभिषेक किया गया। इसके पश्चात नित्य नियम पूजा हुई। इस अवसर पर आम रस से अभिषेक करने का मान अंकित ठोले को मिला तो शांतिमंत्र पढने का मान चेतन बुरसे, पुणे को मिला। अर्चना फल चढ़ाने का मान शीमल पाटणी को मिला। कार्यक्रम में गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी की प्रमुख रूप से उपस्थिति थी।

माताजी ने कहा कि संकटहर पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन करने से अपने ऊपर आए सारे संकट दूर हो जाते हैं। सभी उपस्थित समाज के श्रावक-श्राविकाओं को 11 से 2 बजे तक राजाबाजार के जैन रॉकर्स ग्रुप की ओर से चंद्रकुमार बाकलीवाल, सागर पाटणी, रोहित गंगवाल, प्रतीक सावजी, ऋषिकेश सावजी, आनंद लोहाड़े, हेमंत कासलीवाल, रोहित कासलीवाल, धीरज कासलीवाल, अक्षय कासलीवाल, नीरज काला, कुशल अजमेरा, जीतु पाटणी, स्वप्निल पांडे, सन्नी कासलीवाल, आशीष शहा एवं पीयुष कासलीवाल की ओर से महाप्रसाद का वितरण किया गया। इस अवसर पर शाम 7 बजे आरती हुई। कार्यक्रम में हजारों की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

कार्यक्रम की सफलता के लिए जैन रॉकर्स ग्रुप के सभी सदस्यों के साथ कमल कासलीवाल, दिलीप सेठी, प्रकाश कासलीवाल, नरेन्द्र अजमेरा, एम आर बडजाते, माणिकचंद गंगवाल, हुकुमचंद काला के साथ समाज के अन्य लोगों ने परिश्रम किया।

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

।।श्री ऋषभदेवाय नमः।।

सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी (नासिक) महाराष्ट्र में

अखण्ड पाषाण में बनने वाली विश्व की सबसे ऊँची दिगम्बर जैन प्रतिमा

108 फुट विशालकाय भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव

-पंचकल्याणक-
11 से 17 फरवरी 2016

Highest Jain Idol In World
The Statue of Ahimsa

-मस्तकाभिषेक-
18 फरवरी से प्रारंभ

गुरुणांगुरु चारित्रचक्रवर्ती
प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज

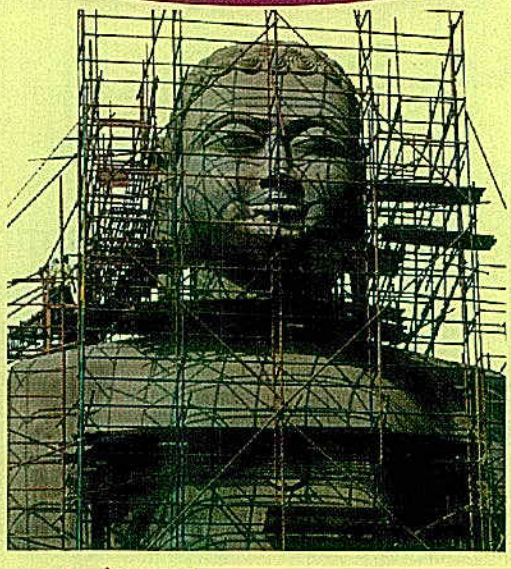

-मार्गदर्शन-
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका
श्री चंदनामती माताजी

-अध्यक्ष एवं कुशल नेतृत्व-
कर्मयोगी पीठाधीश
स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-मूर्ति निर्माण की प्रेरणास्रोत-
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

विश्व के ऐतिहासिक पंचकल्याणक एवं महामस्तकाभिषेक में भाग लेने का स्वर्णिम अवसर

इन्द्र-इन्द्राणी की न्यौछावर राशि
108 इन्द्र-इन्द्राणी
1,00,000/-रुपये
1008 इन्द्र-इन्द्राणी
51,000/-रुपये
(प्रत्येक जोड़ा)

महामस्तकाभिषेक की न्यौछावर राशि		
कलश का नाम	न्यौछावर राशि	सदस्य
1. रत्न कलश	1,00,000/-रु.	7
2. स्वर्ण कलश	51,000/-रु.	5
3. रजत कलश	25,000/-रु.	4
4. भक्ति कलश	11,000/-रु.	3
5. श्रद्धा कलश	5,100/-रु.	2

प्रथम, द्वितीय, तृतीय विशेष कलश एवं पंचामृत अभिषेक के कलशों के लिए निम्न फोन नं. पर संपर्क करें।

न्यौछावर राशि जमा करने हेतु- खाते का नाम-B.R.P.P.M. Samiti Mangitungi बैंक-P.N.B., A/c-3704002100007589 (IFSC Code-PUNB0370400), शाखा-हस्तिनापुर
नोट - राशि जमा करने के उपरांत निम्न नम्बर पर पूर्ण जानकारी अवश्य देवें।

-समिति द्वारा विशेष-

(1) सभी इन्द्र-इन्द्राणियों के लिए इसी राशि में मस्तकाभिषेक का अवसर तथा आवास, पूजन सामग्री, पूजन वस्त्र, भोजन आदि व्यवस्था। (2) 51000/-रुपये अथवा इससे अधिक के सभी दातारों के रंगीन चित्रों से युक्त आमंत्रण पत्रिका व मूर्ति निर्माण का ऐतिहासिक ग्रंथ प्रकाशन करने की योजना। ग्रंथ सभी दातारों को भेंट भी किया जायेगा। स्वीकृति के साथ अपना फोटो भी हस्तिनापुर भेजें। (3) महामस्तकाभिषेक 18 फरवरी से प्रारंभ होगा। आपको अभिषेक किस तिथि में करना है, इसकी सूचना कार्यालय द्वारा 3 माह पूर्व आपको भेजी जायेगी। (4) सौधर्म इन्द्र, धनकुबेर, यज्ञनायक, ईशान, सानत कुमार, माहेन्द्र आदि प्रमुख इन्द्र की जानकारी हेतु निम्न नम्बरों पर संपर्क करें। (5) महोत्सव के मध्य साधुओं, भट्टारकों, विद्वानों, महिलाओं, युवाओं व राष्ट्रीय समितियों के अधिवेशन भी होंगे।

"हजारों हजार वर्ष के लिए बनने वाले इस स्वर्णिम इतिहास के आप स्वयं साक्षी बनें तथा इस महामहोत्सव में भाग लेकर महान पुण्यार्जन करें।"

पूज्य माताजी के मंगल प्रवचन एवं महोत्सव की समस्त जानकारी प्रतिदिन देखें

जिनवाणी चैनल पर प्रतिदिन	पारस चैनल पर प्रतिदिन	कलश चैनल पर प्रतिदिन
दोपहर 3.30 बजे	रात्रि 9 बजे एवं प्रातः 6 बजे	दोपहर 4 बजे

नोट - राष्ट्रीय, प्रांतीय एवं विभिन्न समितियों का गठन किया जा रहा है। आगामी पत्रिकाओं व फोल्डर आदि में शेष जानकारियाँ व समितियों के नाम आदि प्रकाशित किये जायेंगे।

निवेदक

अध्यक्ष
कर्मयोगी पीठाधीश
स्वस्तिश्री
रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी,
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

महामंत्री
डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल
पैठण (महा.)

उपाध्यक्ष
महावीर प्रसाद जैन
बंगाली स्वीट्स, दिल्ली
कमलचंद जैन
खारीबावली, दिल्ली

कार्याध्यक्ष
अनिल कुमार जैन
कमल मंदिर,
प्रीतविहार, दिल्ली

कोषाध्यक्ष
प्रमोद कुमार कासलीवाल
औरंगाबाद (महा.)

मंत्री
इंजी. सी. आर. पाटील, पुणे
संजय पापड़ीवाल, औरंगाबाद
विजय कुमार जैन, जम्बूद्वीप
जीवन प्रकाश जैन, जम्बूद्वीप

महामस्तकाभिषेक एवं स्वयंसेवक समिति अध्यक्ष
प्रो. डी. ए. पाटिल
जयसिंहपुर (महा.)

108 फुट विशालकाय भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति, पो.-मांगीतुंगी (नासिक) महा.

अध्यक्ष कार्यालय-दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, पो.-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404

संपर्क हेतु फोन नं.-मो.-09411025124, 09717331008, 09457817324, 09403688133, 01233-280184 (कार्यालय हस्तिनापुर), 02555-286523 (कार्यालय-मांगीतुंगी)

Website : www.highestjainidolinworld.com www.encyclopediaofjainism.com E-mail : badimurtimangitungi@gmail.com Facebook : jaintirthjambudweep

धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये।